www.faithbook.in

Faithbook®
ACTIVITIES BEYOND BOOK

13th MARCH 2022
Issue 18
BOOK 030

ONE DAY OR DAY ONE

: you decide

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

अनुपम वीतराग वाणी!!

प्रणाम,
वीतराग वाणी का प्रेम जीव को सन्मार्ग में चलने को प्रेरित करता है। इसलिए हमें अपने हृदय में हमेशा वीतराग वाणी को ही स्थान देना चाहिए।
पूर्वकाल में आचार्य भगवंत संस्कृत-प्राकृत में रचनाएं करते थे, ठीक वैसे ही वर्तमान समय में पूज्य गुरुदेव हम पर उपकार करने हिंदी एवं गुजराती भाषा में रचनाएं करते हैं।
Faithbook Knowledge Book में प्रकाशित हो रहे तात्विक, सारगर्भित लेख से कई पुण्यात्माओं को सन्मार्ग प्राप्त हो रहा है इस बात का हमें हर्ष हैं।
वाचकों के अप्रतिम प्रतिसाद को देखते हुए इस माह के अंक में प्रकाशित लेख आप सचमुच सन्मार्ग प्रदान करेगा।

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

आहार की श्रेष्ठता 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

इतने सारे देरासरों की क्या जरूरत है? 04
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 12.0 09
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

वस्तु की खोट? 16
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास - 6 21
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

इन्फोर्मेशन न लें, पर ज्ञान लेते रहें। 25
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

ऐसी दशा हो भगवन्! 27
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 16 29
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : **www.faithbook.in**

Eat Right, Live Bright

आहार की श्रेष्ठता

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

वनस्पति आहार की श्रेष्ठता

- मनुष्य के लिए मांसाहार की अपेक्षा अधिक प्राकृतिक आहार है।
- शाकाहार से सहन शक्ति बढ़ती है।
- आरोग्य की वृद्धि के लिए भी यह मांसाहार से अधिक अच्छा है।
- यह मांसाहार के समान अपवित्र और रोग वर्धक नहीं है।
- क्षार विटामिन तथा जीवन द्रव्य की द्दष्टी से भी मांसाहार की अपेक्षा यह उत्कृष्ट है।
- दीर्घायु के लिए यह उत्तम है।
- आर्थिक द्दष्टी से यह सस्ता है।
- इनकि उत्पत्ति करने से किसी व्यक्ति का नैतिक अध:पतन नहीं होता।
- इस आहार के लिए शिकार जैसे घातक शौक और अनेक प्रकार की क्रूरता की आवश्यकता नहीं।
- शरीर शास्त्र तथा विकासवाद के अनेक विद्वानों ने इसे आशीर्वाद प्रदान किया है। अतः यह वैज्ञानिक भी है।
- धर्म की योग्यता और ह्रदय की कोमलता के लिए शाकाहार अनुकूल है।
- सात्विक है।
- विदेश में शाकाहार बढ़ रहा है। नामांकित व्यक्तिओं, बोडी-बिल्डरो, क्रिक्रेटरो ने शाकाहार अपनाया है।

अण्डा आरोग्यनाशक है

सम्पूर्ण विश्व में विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान जैसे-जैसे संशोधन करता जा रहा है, वैसे-वैसे अंडा आरोग्यवर्धक के बदले आरोग्यनाशक सिद्ध होता जा रहा है। हृदयरोग, हाई ब्लडप्रेशर, कीडनी और पथरी में कारणभूत कालेस्ट्रोल है, जो एक अण्डा में लगभग चार ग्रेन होती है।

अमेरिका के फ्लोरिडा कृषि विभाग ने डेढ़ वर्ष के संशोधन के बाद जाहिर किया था कि, 30% अण्डों में डी.डी.टी. होता है, जो की खतरनाक जहर है।

डॉ.ई.वी. मेक्कॉलम कहते कि, अण्डों में कार्बोहाइड्रेट का सर्वथा अभाव है। कैल्शियम भी बहुत कम होता है। अतः पेट में सड़न पैदा होती है। अंडों में टी.बी. और संग्रहणी का रोग विशेष होने से वह खाने वाले को भी हो जाता है। दूध के साथ मांस या अण्डे खाना विपरीत आहार है, जिनसे सफेद दाग, खुजली, दरार सोयरासीस आदि चर्म रोग हो जाते हैं। इस बात के समर्थन में डॉ. आर. जे. विलियम्स और डॉ. रोबर्ट ग्रांस के कितने ही जानवरों पर प्रयोग सिद्ध किया है कि, 'अण्डे के श्वेत भाग मैं एवीडिन नामक हानिकारक तत्त्व विद्यमान है, जो एग्जिमा, खुजली, दराद, चर्म केन्सर, सुजन आदि उत्पन्न करता है।

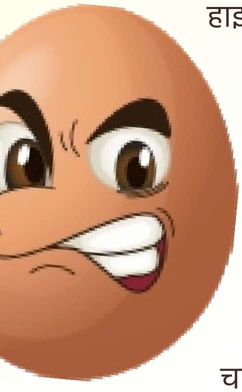

डॉ.जे.एमन विल्कट और डॉ. केथोराहन निम्बो का कथन है कि, "अण्डे के सेवन से हृदय का स्पन्दन रुक जाने का गंभीर भय है। इससे पित्ताशय में पथरी, मानसिक रोग वगैरह दोष उत्पन्न होते हैं।"

डॉ.गोविंदराज कहते है कि, "अण्डे मे नाइट्रोजन, फास्फोरिक एसिड और चर्बी होती है। उससे शरीर में तेजाबीपन बढ़ता है जो अनेक रोगों का सृजक है।"

Newer knowledge of Nutrition तथा How healthy are Eggs के लेखक कहते है कि, नर-मादा के रज-शुक्र में से उत्पन्न होने वाला अण्डा मलीन पदार्थ है। अण्डे की सफेदी में उस जीव के मल-मूत्र मिले हुए है। ऐसी गन्दगी खाना जुगुप्सनीय है। उसे स्पर्श करने वाले या खाने वाले रोगों और अपवित्रता को निमंत्रण देकर सात्त्विकता को खो देते है।

जर्मन प्रोफेसर एग्ररवर्ग कहते है कि, अण्डे का समान कफकारक पदार्थ अन्य नहीं है। 52% कफ उत्पन्न कर सर्दी, खाँसी श्वास आदि रोगों में कारण भूत बनता है।

आजकल बाजार में मिलते, शक्तिप्रद कहे जाने वाले चाकलेट, ब्रेड, केक, आइस्क्रीम, बिस्कीट आदि में भी अण्डे मिलाये जाते है। इन्हें अपना अहिंसक समाज भी खुशी-खुशी खाता है व बच्चों को खिलाता है। 'बच्चों की जठराग्नि कमजोर होने से उन्हें अण्डे या अण्डों से निर्मित कोई वस्तु देना ही नहीं चाहिए।' ऐसी बम्बई की हाफकीन इन्सिट्यूट संस्था की सलाह है।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हेल्थ बुलेटिन में, अंडे, मांस, मछली से सस्ते-गुणकारी शाकाहारी खाद्यान्नों में अधिक प्रोटीन बताया गया है। शाकाहारी आहार बिना हानि पहुँचाएँ शक्ति प्रदान करता है। जबकि अंडे आदि का सेवन अनगिनत नुकसान करते है। आरोग्य के लिए हानिकारक, मिलावटी पदार्थ, दवाइयों पर प्रतिबंध लगाया जाता है। पर अनेक नामांकित डॉक्टरों द्वारा हानिकारक सिद्ध हो चुके अण्डे, मांस पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया जाता है? मनुष्य की जान लेने वाले अण्डे के प्रचार के समक्ष आरोग्यमंत्री कोई

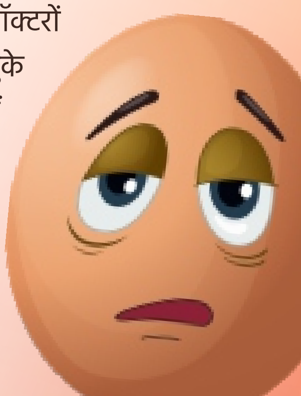

कठोर कदम नहीं उठा सकते है? यह भारत देश के लिए बड़े शरम का विषय है। जन-जनमें सही बात की जानकारी और क्रान्ति लानी आवश्यक है। अतः सर्वत्र साहित्य का प्रचार, प्रदर्शनी, और संत-सतीओं का, वक्ताओं का प्रवचन माध्यम आज कल अतीव जरूरी है।

भारत सरकार प्रजा के स्वास्थ्य का नाश करने वाले, अनेक रोगों को फैलाने वाले अण्डों के उत्पादन को, पोल्ट्री फार्म को सबसीडी-लोन देकर भारतवासियों का घोर अहित कर रही है न? प्रत्येक भारतवासी को, डॉक्टरों को इस भयानक अण्डे का बहिष्कार कर स्वास्थ्य मंत्री, केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिबंध लाने की सख्त आवश्य-कता है। सभी पाठ्य पुस्तकों में अण्डे की खराबी नामांकित डॉक्टरों के अभिप्राय के साथ प्रकट करना चाहिए। भ्रामक प्रचार सख्त रुप में बंद होना चाहिए। इसमें आरोग्य का कानून भी सहा-यक है। जागिए और सबको जगाइए। अन्यथा नुकसान बढ़ता रहेगा।

अहिंसा प्रधान भारत में जहाँ भगवान राम, कृष्ण व महावीर ने जन्म लिया, आज उसी अहिंसा प्रधान देश भारत में 65 प्रतिशत लोग मांसाहारी बन गये है। अहिंसा के सिद्धान्तों को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने वाले भारत में प्रतिदिन लगभग 25 लाख मुर्गों को, 5 लाख बकरों को, 50 हजार गोवंश को देश के कोने-कोने में फैले कत्लखानों में बहुत ही

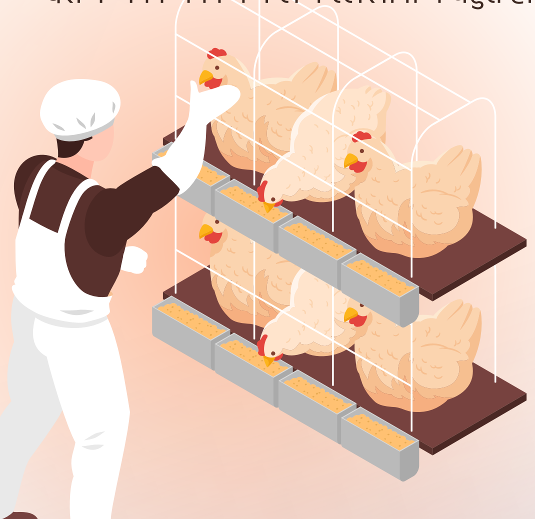

बड़ी निर्दयता से मौत के घाट उतार दिया जाता है।

सरकार का उद्देश्य सिर्फ विदेशी मुद्रा कमाने तक रह गया है। पशु-पक्षियों पर जो अत्याचार हो रहा है इससे सरकार को कोई मतलब नहीं है। बहु-राष्ट्रीय कंपनियों को मांसाहारी भोज्य-पदार्थ बेचने के लिए सरकार प्रोत्साहन दे रही है।

भारत सरकार ने मेकडोनाल्ड नामक अमेरिकन कम्पनी को हैम्बर्ग आदि मांसाहारी भोज्य पदार्थ बेचने के लिए देश भर में 400 मैकडोनाल्ड सामिष जलपान-गृहों को स्थापित करने की स्वीकृति दी है। विदेशी मुद्रा के लालच में सरकार पशु हत्या की अनेक योजनाएं स्वीकृत कर रही है। एक पौंड मांस प्राप्त करने के लिए लगभग 16 पौंड अनाज पशुओं को खिलाया जाता है। उतनी सामग्री का अगर सीधे भाजन के लिए उपयोग किया जाये तो, उस मांस से प्राप्त होने वाली प्रोटीन (शक्ति वर्धक तत्त्व) की मात्रा से पांच गुना अधिक पोषक तत्त्व प्राप्त हो सकते है।

आजीवन वनस्पति-घास-तृण या अनाज खाकर निर्वाह करनेवाले जैसे-गाय-बैल, भैंस, घोडे, ऊंट, हाथी, गधे, बकरे-बकरी, हरण-खरगोश आदि शाकाहारी जीवन जीते है। घास के अभाव भूख सहन करना उन्हें मंज़र है। पर गंदी चीज नहीं खाते है। क्या मानव जाति जानवरों से भी गई गुजरी है?

मांसाहारी मानवों के विचारों में उग्रता-क्रूरता, दया हीनता, आकृति-प्रकृति में तामसपना, तमो-गुण, पतनोन्मुखी आचरण, कुत्सित विचार एवं व्यवहार शरीर का आभा मंडल दुर्गन्ध से वासित एवं धर्म के प्रति विमुखता।

शाकाहारी मानवों की वृत्ति सात्विक, विचारो में नम्रता, सरलता, सादगी सहृदयता एवं सद्व्य-वहारिकता, मुखाकृति, सौम्य-शालीन, ऊर्ध्व-मुखी आचरण, शरीर का आभा मंडल तेजोमय एवं मन-मस्तिष्क धार्मिक संस्कारों से सुसम्पन्न।

इतने सारे देरासरों की क्या जरूरत है?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

चढ़ावे पैसों में ही क्यों लिए जाते हैं? देवद्रव्य का उपयोग अन्य किसी भी कार्य में क्यों नहीं हो सकता? आदि बातें अब बराबर से समझ में आ गईं हैं। अब प्रश्न है कि, इतने सारे देरासरों की क्या जरूरत है?

उत्तर : बाघ और सिंह अपने रहने के लिए गुफा बनाते हैं, सांप बिल बनाता है, पक्षी अपने लिए घोंसला बनाते हैं, अरे! चींटी भी अपना बिल बनाती है। पर पशु-पक्षी की सृष्टि में ऐसा कोई देखने को नहीं मिलेगा कि जो अपने निवास स्थान के सिवा और भी कुछ बनाता हो। दूसरे, पक्षी अपने लिए दूसरा घोंसला या दूसरे पक्षी के रहने के लिए घोंसला कभी भी नहीं बनाता, और अपना एक घोंसला भी जरूरत के जितना ही बनाता है, उससे ज्यादा बडा - बहुत विराट वह कभी भी नहीं बनाता है।

सिर्फ मानव ही ऐसा है जो अपना घर बनाता है, वह भी जरूरत 400 फुट की होने पर भी पैसों की सुविधा हो तो 2400 फुट का भी बनाता है। जिसमें बाकी के 2000 फुट में ज्यादातर उसका Ego रहता है। ऊपर से एक अच्छा घर होने पर भी हिल स्टेशन पर दूसरा बंगला बनाता है। (जिसमें

12 महीने में 12 दिन भी रहता होगा या नहीं यह बड़ा प्रश्न है।) पांच-सात साल बीतने पर लाखों रुपए खर्च करके नया इंटीरियर बनाता है। चार-चार मंजिल का मकान जो अभी और दूसरे 25-30-40 साल तक आराम से टिका रह सकता है, फिर भी उसे रिनोवेट करवाकर सात मंजिल का या उससे भी बड़ा बनाता है। यंत्र सामग्रियों उप प्रश्न से कुदरती स्रोतों का बेहिसाब उपयोग और बेहिसाब व्यय किया जाता है।

अरे! निवास स्थान के अलावा भी स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, सभागृह, थिएटर, दुकान, मार्केट, मॉल, बाजार, इंडस्ट्री, होटल, हॉस्पिटल, विधान-सभा भवन, संसद भवन इत्यादि ढेरों इमारतें करोड़ों-अरबों के खर्चे से बनाता है। इन सभी के लिए किसी को कोई भी प्रश्न नहीं उठता है, बस एक मंदिर के लिए ही कुछ लोगों को प्रश्न होते हैं, और उस प्रश्न को वे लोग बढ़ा-चढ़ाकर फैलाते रहते हैं।

प्रश्न :

पर यह स्कूल-कॉलेज आदि तो जरूरी निर्माण है, फिर उसके लिए प्रश्न क्यों उठेगा?

उत्तर :

मतलब कि आप मंदिर को अनावश्यक मानते हैं? यह तो आज की विकृत विचारधारा की गड़बड़ है। देखो ना! सरकार को भी मदिरा जरूरी लगती है, और मंदिर जरूरी नहीं लगता! इसलिए तो लॉकडाउन से अनलॉक सबसे पहले शराब की दुकान और बीयर बार से किया, और मंदिरों को सबसे आखिर में, उसमें भी अभी भी कितने नियंत्रण रखे गए हैं।

प्रश्न :

अगर मंदिर जरूरी है, तो उसका उपयोग क्या है?

उत्तर :

इस प्रश्न का उत्तर मैं प्रति-प्रश्न के द्वारा दूँगा।

प्रति-प्रश्न :

हॉस्पिटलों का क्या उपयोग है?

प्रति-उत्तर :

तरह-तरह के रोगों से मानव को निरोगी बनाने के लिए हॉस्पिटल होती है।

उत्तर :

शारीरिक रोगों को मिटाने के लिए जिस तरह हॉस्पिटल होती है; उसी तरह आत्मिक रोगों को मिटाने के लिए मंदिर होते हैं। फिर वह अना-वश्यक कैसे हुआ?

प्रश्न :

आत्मा को कौन-से रोग लगे हुए हैं?

उत्तर :

बेशुमार रोग हैं, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, विषय, वासना, ईर्ष्या, निंदा, आहारसंज्ञा, भय-संज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा, बात बात में कमी

महसूस होना, बुरा लग जाना, छोटी-छोटी बातों में चिंता करना, टेंशन करना, कृपणता, स्वार्थांधता, निर्दयता आदि।

प्रश्न :

सालों से पूजा आदि प्रभुभक्ति करने पर भी क्रोध तो वैसा का वैसा ही खड़ा मिलता है, तो फिर मंदिर के कारण ये आत्मिक रोग मिट सकते हैं, ऐसा कैसे कह सकते हैं?

उत्तर :

हॉस्पिटलाइज्ड होकर, 8-10-15 दिनों तक हॉस्पि-टल में रहने पर भी, ट्रीटमेंट लेने पर भी, रोग नहीं मिटता। क्या ऐसा नहीं होता है?

प्रश्न :

पर मंदिर में जाने वालों का रोग मिट जाता है, उसका क्या प्रमाण है?

उत्तर :

क्रोध करने के बाद भी, कभी भी उसका स्वीकार नहीं करना, मात्र उसका बचाव करना, उस बचाव करने में अगर जरूरत पड़े तो नया झगड़ा करना, और नया क्रोध करना। ऐसा करने वाले साक्षात् क्रोध के अवतार के समान मनुष्य भी प्रभु चरणों में अपने क्रोध के लिए आंसू बहाते हैं, पश्चाताप करते हैं। क्रोध का तूफान, अहंकार का तूफान थोड़ा भी कम हो, तभी यह संभव होता है। वरना आंसू कैसे निकल सकते हैं? क्रोध की यह थोड़ी सी कमी क्या रोग के आंशिक निवारण का प्रमाण नहीं है?

संत नामदेव पहले एक खूंखार गुंडा था। किसी बड़े पर्व के दिन पर मंदिर में प्रभु की उपासना करने गया था। कमर पर तलवार तो थी ही। वहीं एक छोटा बालक और उसकी माँ भी मंदिर में आई हुई

थी। उस दिन मंदिर में राजभोग चढ़ाया जाने वाला था, किन्तु राजभोग देखकर बालक अपनी माँ से राजभोग की मांग करने लगा। माँ ने कहा, 'बेटा! शांति रख, अभी तो अभिषेक होगा, पूजा होगी, फिर राजभोग प्रभु को चढ़ाया जाएगा, और उसके बाद हमें प्रसाद मिलेगा।' पर भूखा बालक राह देखने को तैयार नहीं था, इसलिए वह रोने लगा। माँ उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी, लेकिन बालक और ज्यादा रोने लगा। खुद को विक्षेप होने की वजह से नामदेव उस बाई के पास आया और कहा कि, 'बहन! बाहर मिठाई की दुकान से थोड़ी मिठाई खरीदकर तेरे बच्चे को खिला दे, तो वह शांत हो जाएगा।'

बाई की आंखों में से आंसू बहने लगे। रोती हुई आवाज से उसने नामदेव से कहा कि, (उसे पता नहीं था कि, सामने खड़ा व्यक्ति वही कुख्यात गुंडा नामदेव है।) 'भाई! जब से गुंडे नामदेव ने इसके बाप की हत्या कर दी है, तब से खरीद कर मिठाई खाने के हमारे दिन खत्म हो गए हैं।' और बाई बिलख-बिलख कर रोने लगी। नामदेव की नजर प्रभु की कृपा नजरों को पी रही थी, और कान इस बाई के शब्दों को सुन रहे थे। इस कृपा और शब्दों ने नामदेव के दिल को झंझोड़ दिया। वह मंदिर से बाहर निकला। बाई को बाहर बुलाया।

अपनी तलवार उस बाई के हाथ में देते हुए कहा, 'बहन! तेरे पति हत्यारा नामदेव मैं ही हूँ। ले यह तलवार! मेरी गर्दन पर चलाकर हत्या का बदला ले ले।' ऐसा कहकर अपना मस्तक झुकाकर नामदेव खड़ा हो गया।

बाई ने तलवार तो हाथ में नहीं ली, पर नामदेव से कहा, 'भाई! पति के बिना मेरी और मेरे संतानों की क्या हालत हुई है, यह मैं ही जानती हूँ। मेरी भाभी और भतीजों की ऐसी हालत में कैसे कर सकती हूँ? मैंने तो तुझे माफ कर दिया है।'

नामदेव वहाँ से निकल गया और सन्यास ले लिया। एक समय का नामी गुंडा अब नामांकित संत बन गया।

हाँ, मंदिर एक हॉस्पिटल है, यह क्रूरता, निर्दयता, तीव्र पाप-रस आदि रोगों को मिटाकर अहिंसकता, दया, पाप के पश्चाताप आदि रुप आरोग्य प्रदान करता है।

वासना में अंध होकर भयंकर अकार्य करने वाले भी प्रभुचरणों में आकर फूट-फूटकर रोते हैं। वासना की तीव्रता कम हुए बिना क्या यह संभव है?

दूसरी बातों को एक बार छोड़ो। मंदिर की तरह पब्लिक की भीड़ तो मॉल और मल्टीप्लेक्स में भी होती है। पर भिखारी ज्यादातर मंदिर के बाहर ही खड़े रहते हैं। मल्टीप्लेक्स या मॉल के बाहर नहीं, क्यों? इसलिए कि भिखारी भी यह समझता है कि मंदिर में भगवान भले ही मौन हैं, पर फिर भी कृपणता, स्वार्थरसिकता आदि का ट्रीटमेंट प्रभु करते हैं, और भक्त को सहज उदारता, परोपकार आदि की प्राप्ति होती है।

उसी तरह मनुष्यों ने क्रिकेट, हॉकी, टेनिस आदि विविध क्रीड़ा संकुल बनाए हैं। जिससे रोज-बरोज के जीवन रुटीन से वह थोड़ा ताजा - fresh हो सके। कुछ खेल कुछ लोगों को बोर करते हैं, फिर भी अन्य कुछ लोगों को ताजगी भी देते हैं, इसीलिए हर प्रकार के खेल के संकुल बनाए गए हैं। तो उसी तरह जीवन में अनेक प्रकार के विषाद की छाया से बाहर आकर ताजगी का अनुभव सैकड़ों, हजारों भाविक लोग प्रभुमंदिर में करते हैं। इसमें उनका अनुभव अपने आप में प्रमाण है। आप स्वयं भी इसका अनुभव कर सकते हैं।

मन को up-set करके, चिंता, टेंशन, डिप्रेशन, यहाँ तक कि suicide तक की दिशा में ले जाए ऐसी घटना जब बनती है, तब मेरा आपको आह्वान है कि, देरासर में जाओ, प्रभु की नजरों से नजरें मिलाओ, और रत्नाकर पच्चीसी की पच्चीस स्तुतियाँ मंद स्वर से, धीमी गति से, शब्द दिल तक पहुँचे और दिल के तार झनझना दे, इस तरह बोलो। **15-17-20 मिनट की यह प्रभु भक्ति आपको मानसिक stress से 50% रिलैक्स तो कर ही देगी ऐसी मेरी श्रद्धा है।**

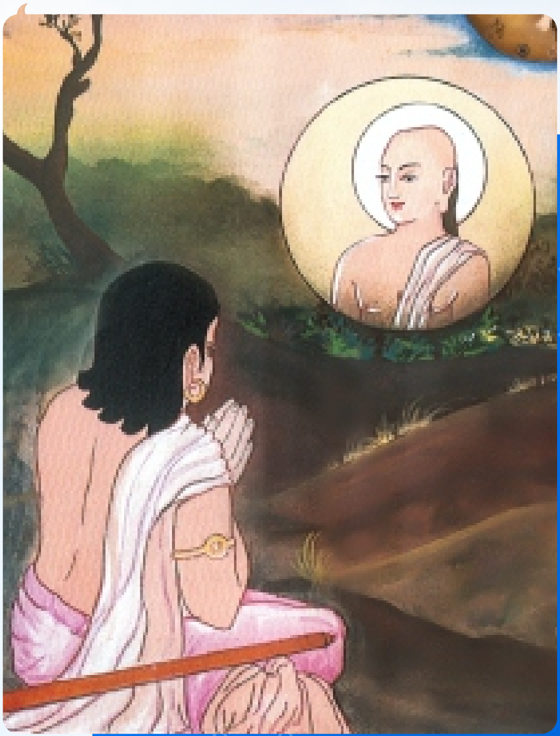

पर सामान्यतः मानव के जीवन में जब ऐसी कोई घटना होती है, तब चिंता, टेंशन, आर्त्तध्यान की शरण में जाना, या तो डिप्रेशन में जाकर आत्म-हत्या का मार्ग अपनाना, या तो गुटखा, शराब या ड्रग्स की शरण में जाना, वह इन सभी का ही आदी है। प्रभु-शरण में जाने के लिए तो प्रभु-शरण का रस होना चाहिए। उसके लिए रोज प्रभु भक्ति करना जरूरी होता है। यदि मंदिर ही नहीं होगा तो यह कैसे कर सकेंगे?

पर एक बात निश्चित है। चिंता, टेंशन आदि, या गुटखा, शराब आदि किसी भी वस्तु, जो विषम परिस्थिति का निर्माण हुआ होता है उसे हल तो कर ही नहीं सकती है। और ऊपर से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक प्रचंड नुकसान करके परिस्थिति को और बिगाड़ देती है। उधर प्रभु भक्ति, शरीर को स्वस्थ रखती है, मन को प्रसन्नता से भर देती है, और आत्मा को शांत, प्रशांत और उपशांत बनाती है। साथ ही पापोदय को रोककर पुण्यो-दय करके परिस्थिति को सुलझा भी सकती है।

मानव ने मनोरंजन, आनंद, प्रमोद आदि के लिए थिएटर, मल्टीप्लेक्स, नाट्यगृह आदि बनाए हैं। तो उसी ही तरह सैकड़ों-हजारों प्रभु भक्तों को प्रभुभक्ति में आनंद का अनुभव होता है।

कैसा आनंद? खाना भूला, पीना भूला, अरे! नींद और आराम तक भूला। ऐसा एकाकार हुआ कि सुलगता संसार भी भूल गया। यदि आनंद का अनुभव नहीं होता, तो रोज-रोज घंटों तक प्रभु-भक्ति करना संभव ही नहीं है।

मानव ने टाइम-पास के लिए टी.वी., मोबाइल, व्हाट्सएप्प, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, चैटिंग आदि कई माध्यम अपनाए हैं। पर ये सारे माध्यम उसके जीवन की पवित्रता, सदाचार, और शील के लिए जुए के समान हैं। दांपत्य जीवन में आग लगाने वाले हैं। प्राण से भी अधिक प्यारे पार्टनर का (पति का या पत्नी का) खून कराने तक पहुँचाने वाले हैं। ये सब इस दुनिया का Worst से Worst व्यसन है। यह गृहिणी को गृहकार्य नहीं करने देता है, विद्यार्थी को पढ़ने नहीं देता है, कर्मचारी को ऑफिस के कार्य करने में रुकावट पैदा करता है, सेवा करने वाले को सेवा करने से वंचित कर देता है। यह मानव को शंकाशील, चिड़चिड़ा, गुस्सैल, अपनी फर्ज के प्रति लापरवाह और आलसी बना देता है। इन सारी चीजों का दुनिया ने हजारों बार अनुभव किया है, और अभी भी रोज-रोज अनुभव कर रही है। फिर भी इसके लिए कोई प्रश्न नहीं उठाता है।

जबकि मंदिर और प्रभु भक्ति तो टाइम-पास करने का श्रेष्ठ माध्यम और निर्दोष माध्यम है। और ऊपर से इसका कोई drawback नहीं है। साथ ही इससे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक इत्यादि सारे लाभ तो अनेक मिलते हैं। और फिर भी उसके लिए ही प्रश्न!

अहो! कलिकाल!
अहो! विषम शिक्षण!!
अहो! विपरीत विचारधारा!!!

Everything is Online, We are Offline 12.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

आज इस लेख में एक साथ अनेक प्रश्नों के समाधान आपको मिलने वाले हैं। शायद इस लेख को जो बराबर समझ लेगा, वो वर्तमान में चल रहे खेल को और भविष्य के लिए बन रही जेल को समझ लेगा।

आज से 6 माह पूर्व एक मुनिराज ने मुझे मार्मिक प्रश्न पूछ लिया था, जिसका जवाब उस वक्त मेरे पास नहीं था, पर आज मैं दावे से इसका सटीक जवाब दे पाऊँ, इतनी जानकारी मेरे पास आ गई और आज की दुनियाँ में वो ही सुरक्षित है, वो ही विजेता है, जिसके पास ज्ञान है, सावधानी है एवं जागृति है।

मुझे पूछा गया, मुनिराज का प्रश्न सुंदर था कि, 'महात्मन्! आप या आप जैसे अनेक लोग वैक्सीन इत्यादि का विरोध कर रहे हैं और विरोध के पीछे कारण बता रहे हैं कि दुनिया की आबादी कम करने का षड़यंत्र है या दुनिया को गुलाम बनाने की साजिश है। महाराजजी! मुझे तो आप सीधा-सीधा ये बताईये कि यदि टीके से लोगों को मारने का प्लान है तो गुलाम किसे बनायेंगे? और यदि गुलाम बनाने का प्लान है तो उसे मार कैसे सकते हैं? उन्हें तो जिंदा रखना पड़ेगा, यदि टीके से लोग मर जाने वाले हो तो गुलामी कैसे?'

ऐसे प्रश्न एक नहीं, हजारों है और आधी-अधूरी जानकारी में में जवाब देना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने वहाँ पर मौन धारण किया। मगर, आज मेरे इस लेख को पढ़कर आपको ऐसे अनेक प्रश्नों का सटीक समाधान मिलेगा और क्या-क्या प्रश्न लोगों के दिल में उठ रहे हैं, उसकी सूचि पढ़ लो, जैसे कि -

2. पूर्व में जो भी टीके लगते थे, उसमें कभी भी शरीर पर धातु की चीजें चिपकती नहीं थी, इस बार लगे कोविड़-टीके में देश ही नहीं, विदेश में भी लोगों के शरीर पर लोहे की चम्मच, मोबाईल फोन, धातु की प्लेट-डीस इत्यादि अनेक चीजें चिपकने के असल विडियों जमकर शेयर हुए हैं, इतना ही नहीं, कुछ लोगों के शरीर पर तो स्पर्श

मात्र से बल्ब जलने के भी दृष्टांत घटित हुए हैं, तो जहन में सहजरूप से प्रश्न उठता है कि, टीके में ऐसा कौनसा द्रव्य डाला गया है, जिससे लोहा चिपकने लगता है या बल्ब जलने लगता है?

3. टीके लेने वालों में, हार्ट-अटैक या ब्रेन स्ट्रोक के किस्से अत्यधिक सुनने में आ रहे है, क्या ऐसी कोई चीज टीके में हैं, जो जानलेवा है? यदि है तो वो कौनसी चीज है? साथ में यह प्रश्न भी इससे जुड़ा है कि,

4. यदि टीका हार्ट/दिमाग को नुकसान पहुँचा रहा है तो सभी लोगों को यह समस्या क्यों नहीं है? कई लोगों को तो बिल्कुल भी साइड इफेक्ट्स के रूप में एक बुखार तक नहीं आया है, तो इसका क्या कारण है?

5. जो शीर्ष स्थानों पर बैठे हैं, वो तीसरी-चौथी इत्यादि लहर की भविष्यवाणी किस आधार पर करते हैं?

6. जिसके नाखून में भी रोग नहीं था, जिसने किसी भी प्रकार की दवाई अपनी जिंदगी में कभी भी नहीं ली थी, और इतना ही नहीं, फिटनेस के लिए जो नियमित व्यायाम, प्राप्राणायाम के अलावा स्पोर्ट्स में व्यस्त रहते थे, इतना ही नहीं फिटनेस के लिए जो, लोगों के बीच सुप्रसिद्ध थे, उन्हें भी टीका लगने के थोड़े ही समय के बाद नाक से खून बहना, हार्ट फेल हो जाना, मृत्यु हो जाने जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ा और ऐसा व्यायाम नहीं करने वाले, कुछ गंभीर रोगों से ग्रसित भी टीका लेने पर स्वस्थ रहे, ऐसा क्यों?

7. सन् 2021 के अप्रैल-मई महिनों में आई दूसरी लहर के दौरान कुछ स्थानों पर कई लोगों को उंगली से कहीं पर छूने से करंट लगने की अनुभूति हुई थी और उन्होंने उसकी शिकायत भी की थी। ऑक्सिजन की कमी होने पर साँसों की दिक्कत का भी सामना कुछ लोगों को करना पड़ा, इसका क्या कारण?

8. यदि टीका खतरनाक है तो जबर्दस्ती क्यों? और जबर्दस्ती करने पर भी जनता इसका विरोध क्यों नहीं कर पाती है? यदि सभी को टीका लगा देंगे तो सभी का बचना मुश्किल हो जायेगा क्या? फिर शासक किस पर राज करेंगे?

क्योंकि बिना प्रजा, राजा भी राज कैसे करेगा? इसी कारण से अधिकांश लोगों को आज भी बैक्सीन से नुकसान होने की बातें बेतुकी लगती है। वैक्सीन से लोगों को मारने की बातें पागलपन में आकर किसी पागल द्वारा किया प्रलाप लगता है।

मगर, इन सभी आशंकाओं के बीच प्रश्न भी उठते ही रहते हैं कि, हकीकत में, दाल में

कुछ काला लगता जरूर है। (टीका लेने वाले भी खुलकर कुछ कह नहीं पाते हैं) तो वो काला क्या है? आईये बता रहे हैं , काला क्या है?

मैं यहाँ पर वैक्सीन का विरोध या समर्थन करने के लिए नहीं आया हूँ, मैं तो सिर्फ और सिर्फ वो जानकारी दे रहा हूँ, जो बहुत विशाल फलक से अर्जित की गई है और जो आपको भविष्य में भी हर कदम पर उपयुक्त होने वाली है। इस लेख के प्रारंभ में उठाये गये आठों प्रश्नों का बिन्दु वार उत्तर देने से पूर्व उन उत्तरों की भूमिका करनी जरूरी है।

आज से 50/60 साल पहले हॉलीवुड की पिक्चरों में प्लास्टिक की महिमा गाई जाती थी। प्लास्टीक को मैजिक मटीरीयल बताया जा रहा था (जैसे 1918 में एस्पीरीन को जादुई गोली बताकर रोगियों को दी जाती थी और बाद में 90 साल बाद 2008 को रिसर्च सामने आया कि, 1918 से 1923 तक महामारी में जो 5 करोड़ से अधिक लोग मर गये थे, वो महामारी के कारण नहीं, अपितु एस्पीरीन के कारण मारे गये थे। एस्पीरीन का आवरडोज मृत्यु का मुख्य कारण था, ऐसी तो अनेक चीजे हें, जिसे विज्ञान ने अपने सिर पर चढ़ाया था, वो बाद में बहुत ही खतरनाक सिद्ध हुई थी।)

ठीक वैसे ही, पिछले कुछ सालों से ग्रेफीन/ग्रेफाईन को वैज्ञानिक लोग बहुत ही चमत्कारिक द्रव्य बताने पर तुले हैं। हकीकत में यह ग्रेफीन काला रंग का द्रव्य ही है (दाल में काले की जो बात लिखी थी इसमें काला रंग इसी का समझ लो।)

देखो, एक विज्ञापन के जरिये ग्रेफीन को कैसे ग्लोरिफाई (महिमा मंडित) किया जा रहा है, वैज्ञानिक लोग इस विज्ञापन में सबसे पहली पंक्ति बोल रहे हैं WHY GRAPHENE TAKE OVER THE WORLD? (क्यों ग्रेफीन पूरे विश्व को अपनी जद में ले रहा है?) विज्ञापन में फिर तो ग्रेफीन को वंडर मटीरीयल या मैजिक मटीरियल बनाने में कोई कसर छोड़ी नहीं गई है।

(वास्तव में ग्रेफीन कोई मैजिक मटीरियल है या नहीं, पता नहीं हैं मगर मेग्रेटिक मटीरियल अवश्य है।)

वे लोग ग्रेफीन के क्या-क्या फायदे हैं, वह बता रहे हैं, लेख लंबा होने के भय से हम नहीं बता रहे हैं जिसे जानना हों लेख के अंत में दिए नंबर पर संपर्क करें।

आपसे जो छिपाया गया है, वो उजागर करना हमारा कर्त्तव्य भी है और दायित्व भी...

सन्-1962 में सबसे पहले माईक्रोस्कोप में ग्रेफीन को देखने का दावा किया गया है। सन्-2004 से ग्रेफीन को मैजिक मटीरियल बताया जाने लगा। सन्-2010 में ग्रेफाईट में से ग्रेफीन को अलग करके उसका मोनोलेयर (अत्यंत सूक्ष्म परत) बनाने में सफलता हासिल करने वाले वैज्ञानिक को नोबेल पारितोषिक दिया गया।

पेन्सिल में कार्बन का उपयोग होता है। कार्बन से बनी हुई तीन प्रकार की चीजें व्यवहार में प्रचलित

है 1.Diamond(हीरा), 2.Charcoal(कोयला), 3.Graphite(पेन्सिल इत्यादि में उपयुक्त पदार्थ) ग्रेफाईट से धनता में कोयला और कोयला से धनता में हीरा अधिक धन होता है। ग्रेफीन इसी ग्रेफाईट में से मिलता है और उस में से बनी हुई जो पतली सी लेयर है उसे ही ग्रेफीन (ग्रेफाईन) कहते हैं।

टाइटेनियम, एल्युमिनियम, डायमण्ड से भी ज्यादा स्ट्रांग ग्रेफीन होता है और नॉर्मल कार्बन से ही मिल जाता है इसलिए वैज्ञानिक इसे बहुत अच्छा बता रहे हैं, लेकिन ग्रेफीन बहुत ही जोखिम भरा सिद्ध होने वाला है (या कहो कि अभी हो रहा है।)

प्रतिष्ठित लोग ग्रेफीन के पीछे भरपूर पैसे भी लगा रहे हैं और उसका बहुत प्रचार भी कर रहे हैं। ग्रेफीन को वे लोग Black Goo कह रहे हैं (शायद Google के नाम के पीछे भी ये ही ग्रेफीन को अमर बनाने की चाल हो|) वे लोग ग्रेफीन को Black Gold (काला सोना) भी बता रहे हैं। यूरोप में स्थित CERN लैब में प्रयोगरत वैज्ञानिक इसी ग्रेफीन को God Particle बताते हैं और साथ में ऐसा बयान भी कर रहे हैं कि, विश्व भगवान ने नहीं बनाया, इस ग्रेफीन से विश्व बना है (अतिश्योक्ति की भी कोई सीमा होनी चाहिए...)

ग्रेफीन को इतना बड़ा क्यों बताया जा रहा है? ग्रेफीन के इतने गुणगान क्यों गाये जा रहे हैं? आईये, इसका राज़ जानने का प्रयास करते।

विगत्-200/300 सालों में, अलग-अलग काल-खंड़ में औद्योगिक क्रांति हुई। जिसमें प्रथम औद्योगिक क्रांति में स्टीम इंजन की खोज हुई + रेल-यात्रा शुरु हो गई और भाप से चलने वाले यंत्रों से उद्योगों को गति मिली। द्वितीय औद्योगिक क्रांति से दुनिया को बिजली मिली। तृतीय औद्योगिक क्रांति से दुनिया को लेपटोप, मोबाईल, पेजर, स्मार्ट फोन मिले। अब चतुर्थ औद्योगिक क्रांति में पूरी दुनिया को इन्टरनेट से जोड़ने की कवायद चल रही है। जिसमें ग्रेफीन पूरी गेम का बादशाह सिद्ध होने वाला है।

प्रश्न : ऐसा क्यों?

उत्तर : ऐसा इसलिए कह सकता हूँ, क्योंकि सभी जानकार एक सुर में यह स्वीकार करते हैं कि 'ग्रेफीन से अच्छा विद्युत, अग्नि, इलेक्ट्रोन और मोबाईल टॉवर के रेडीयोवेव्स (तरंगों) का वाहक इस विश्व में कोई दूसरा नहीं है। '(Graphine is Great conductor of Heat, Electron, Ele ctricity and Radio Waves also...)'

पहलें की तीनों औद्योगिक क्रांति में इन्सान किसी उत्पाद (Product) को खरीदता था मगर अब चौथी औद्योगिक क्रांति में इन्सान स्वयं ही उत्पाद (Product) बनेगा और उसे खरीदने वाले वो लोग होंगे, जो इस दुनियां को गुलाम बनाकर, लो गों पर शासन करना चाहते हैं।

इन्सान को मशीन बनाने में, मशीन में तब्दील करने में बड़ा उपकार इसी ग्रेफीन का होगा और ऐसा ग्रेफीन इन लोगों के हाथों में अब आ चुका है।

ग्रेफीन के इतने गुणगान वे लोग इसीलिए गा रहे हैं, ताकि कल्याणकारी समझकर लोग अपने शरीर के अंदर इसे खुशी-खुशी डलवा दे।

इन्सानों की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखने हेतु, उन गतिविधियों पर नियंत्रण रखने हेतु, रेडियो फ्रीक्वेंसी वाली ID, प्रत्येक मानव के अंदर डाल ना जरूरी है, जिसे RFID चिप कहा जाता है। RFID शरीर के अंदर जो जाती है, वो दो प्रकार की होती है (कोई भी RFID चिप 2 प्रकार की होती है।)

1. Active, 2. Passive, इन में पेसीव चीप जो होती है, वो डाटा तभी ट्रांसफर कर सकती है, जब रीसीवर उसके नजदीक आता है। डाटा शेयर भी तभी कर सकती है। दूसरी बात, इंटरनेट से कनेक्शन की पेसीव चिप में जरूरत नहीं रहती है, मगर एक्टिव चीप जिस किसी को भी लगती है वो दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचे, उसका ट्रेसिंग आसानी से कर सकते हैं। हालांकि, एक्टिव चिप के लिए इंटरनेट कनेक्शन और चार्जिंग की सुविधा जरूरी है, लेकिन इसका भी तोड़ इन लोगों ने निकाल लिया है।

लगातार इंटरनेट कनेक्शन हेतु हजारों की संख्या में आकाश में छोड़े गये सेटेलाइट्स और लगातार RFID चिप को चार्ज करके रखने के लिए बॉडी में डाला गया ग्रेफीन, इन दोनों के जरिए वे लोग इन्सानों के शरीर को चलती-फिरती, जीती-जागती बैटरी में तब्दील करना चाहते हैं और साथ ही साथ इंसानों को अपना गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं।

ग्रेफीन की मात्रा शरीर के अंदर डालने के पीछे ये ही कारण है कि, लोगों के शरीर में बिजली या 5G के रेडिएशन प्रसार होने पर भी लोगों को पता नहीं चल पायेगा।

इन्टरनेट के साथ इन्सानों को हमेशा-हमेशा के लिए जोड़ कर रखने के लिए, इन्सानों को मशीन बनाने के लिए, इन्सानों को गुलाम बनाये रखने के लिए और जब जरूरत पूरी हो जाये तब उन इन्सानों को खत्म करके फैंक देने के लिए अब इनके पास अति आधुनिक तकनिक से लैस 5G और उसमें उपयुक्त ग्रेफीन आ चुका है।

ग्रेफीन उसे कहते हैं, जो कार्बन का ही एक Solid (घन) Form है|

ग्रेफीन ऑक्साईड उसे कहते हैं, जो उसी ग्रेफीन का प्रवाही स्वरूप (लिक्विड फोर्म) है। यदि अपने शरीर के अंदर ग्रेफीन या ग्रेफीन ऑक्साईड चला जाये तो उसे निकालना बेहद मुश्किल, समझो कि नामुमकिन है। ग्रेफीन पानी में आसानी से घुल-मिल जाता है और ग्रेफीन के छोटे-छोटे कण इंजेक्शन की सुई के माध्यम से आपकी रक्त वाहिनी में आसानी से घुसाया जा सकता है। हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना है, मगर शरीर का अधिकांश हिस्सा पानी का है, अत: ग्रेफीन शरीर में घुसने के बाद पूरे शरीर में फैल जाता है। जब इसी ग्रेफीन को मोबाईल टॉवर के रेडीएशन्स मिलते है या ग्रेफीन में से इलेक्ट्रीसिटी पास की जाती है,

तब बिखरे हुए कण एक स्थान पर एकत्रित भी हो सकते हैं और मनचाही तबाही भी मचा सकते हैं। ग्रेफीन के बिखरे हुए कण एक परत भी बना सकते हैं, विभिन्न कड़ियों से निर्मित जंजीर बनकर ग्रेफीन इन्सान को अंदर से गुलाम बनाकर रहता है। पाकिस्तान में स्थित प्रबुद्ध नागरिक जैकब कहते हैं कि सन् - 1999 में आई हॉलीवुड की मूवी 'मेट्रीक्स' में साफ-साफ बता दिया था कि, 'हम इन्सान के शरीर को बैटरी में बदल देंगे।'

टेडटॉक शो (बहुत ही सुप्रसिद्ध शो है, जो करोड़ों लोग देखते हैं और उस मंच से बोलने वालों के प्रत्येक शब्द गंभीरता से सुने जाते हैं।) के अंदर ग्रेफीन के बारे में प्रस्तुति देने वाली एक वैज्ञानिक महिला ने दिसम्बर सन् 2016 में बताया था कि, ग्रेफीन मनुष्य DNA सिक्वेंसींग में भी उपयोगी होंगे। यहाँ पर गौर करने की बात ये है कि, मनुष्य के DNA के साथ छेड़छाड़ करने में भी ग्रेफीन उपयुक्त होने वाले हैं, फिर भी लोगों को इसकी भयानकता समझ में नहीं आ रही है।

किसी को मेरी बात मजाक लगती है तो इस वाकये पर भी गौर करने जैसा है। सन्-1960 में एक प्रयोग किया गया था। सांड के दिमाग में एक चिप लगाई गई थी और उसमें रेडियोवेव्स के आधार पर अंकुश स्थापित किया गया था। जैसे ही सांड सामने वाले को मारने के लिए दौड़ पड़ा, लाल कपड़ा और अन्य भड़काऊ सामग्री होने पर भी रेडियोवेव्स छोड़ने पर सांड पीछे हट गया था। वो बिल्कुल ही भूल गया कि, में करना क्या चाहता था। सांड के दिमाग में लगाई चिप के जरिये उसे मनचाहे तरीके से नियंत्रित किया जा सकता था। Electro Magnetic Waves ने सांड को पूरा कंट्रोल कर रखा था, मगर वो चिप बाद में Active तभी रह सकती है, जब उसे चार्ज किया जाता रहे। शरीर के अंदर ऐसा कोई चार्जिंग प्वाईन्ट नहीं है और चार्जिंग की सामग्री भी नहीं है... इसलिए ऐसी कोई चीज शरीर में डालनी जरूरी है, जिससे इलेक्ट्रो मेग्नेटीक तरंगे और विद्युत, जब-जब भेजी जाये, उसे झेलने वाला द्रव्य वहाँ उपस्थित हो और उसके जरिये RFID चिप चार्ज होती रहे। अपना काम बखूबी करती रहे।

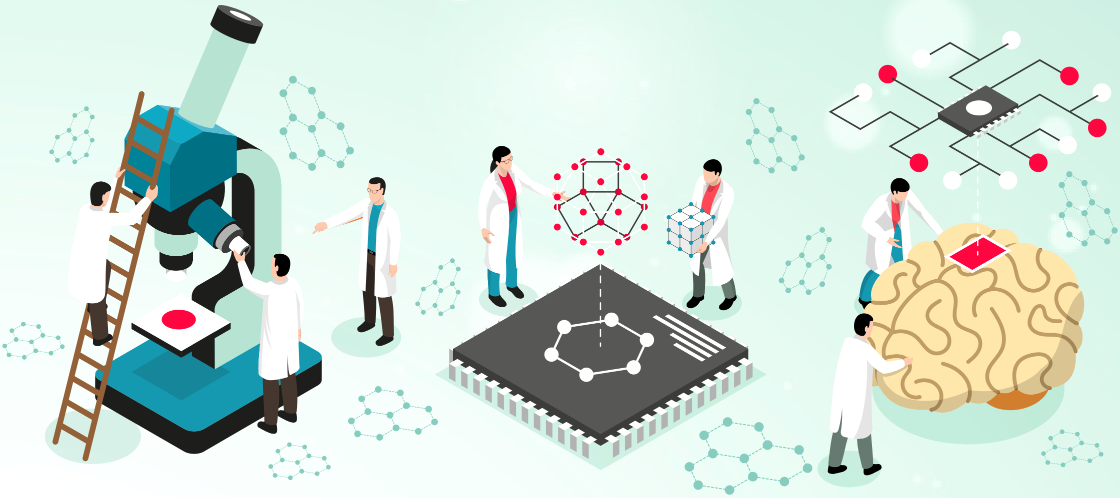

इस पर गहराई से रिसर्च करने वाले अल्मास ने एक गजब की बात बताई है। जेम्स बॉण्ड की पिक्चर में पहले ऐसे दिखाया जाता था कि, जेम्स बॉण्ड, रिमोट कंट्रोल से गाड़ी खोलता है। बंद करता है... या फिर स्मार्ट फोन से व्यवहार करता है... 25/30/40 साल पूर्व में ऐसी बातें पिक्चर में देखने पर हमें नया लगता था, अजीब सा लगता था और हमें ऐसा लगता था कि ये सारी बातें काल्पनिक है, वास्तविक धरती पर इसका उतरना असंभव है, मगर जब वास्तव में ऐसी चीजें हम उपयोग ले रहे हैं तो हमें कोई भी प्रकार का अब आश्चर्य नहीं होता और सहजता से स्वीकार्य हो चुका है। कई बार, कई चीजों को सभी लोगों में स्वीकार्य बनाने के लिए भी ऐसी चीजें पिक्चर में पहले ही दिखा देने का कार्य ये लोग करते आये है। इसे Predictive Mind Programing कहते हैं। पहले से ही लोगों को भविष्य में आने वाली स्थिति या परिस्थितियों के लिए मानसिक रूप से तैयार कर देना।

ग्रेफीन निर्मित नेनो टेक्नोलॉजी से मनुष्यों को फायदा नहीं अपितु भयानक नुकसान होने वाला है, लेकिन वे लोग अभी से सभी के मन-मस्तिष्क को तैयार करने में लगे हैं, ताकि जब प्रोग्राम लॉन्च हो तब किसी को भी इसके खिलाफ प्रश्न खड़े करने का मन ना हो।

ऐसी ही एक मूवी आई थी, 'Fortress' जिसके अंदर दिखाया गया है कि, जेल में लाये गये कैदियों के पेट में ऑपरेशन करके एक केप्सुल डाली जाती थी। यदि कैदी भागने की कोशिश करें या भाग जाये तो केप्सूल को रिमोट कंट्रोल के जरिये अंदर ही अंदर खोल दिया जाता था। केप्सूल खुलने पर बम की तरह ब्लास्ट होता और भागने वाले कैदी का पेट फट जाता था। कैदी भागने पर भी बच नहीं सकता था, मर जाता था।

इस आधार पर एक भयानक कल्पना जहन में आती है कि, क्या हमारे शरीर के अंदर भी ऐसी ही कोई चीज डाली गई है या डालने वाले हैं, जो हमें असुरक्षित करें?

जानते हैं अगले एपिसोड में...

बहुत ही जरूरी बातें, आपके जीवन से जुड़ी बातें, जानने हेतु आप इसका अगला पार्ट बिना चूके अवश्य पढ़ना।

इस लेख में उठाये गये, आठों प्रश्नों के उत्तर भी उसी अंक में आपको मिलेंगे...

(क्रमशः)

वस्तु की खोट?

प्रियम्

लगत[5] पिया कह्यो माह्हरो रे, अशुभ तुम्हारे चित्त;
पण मोथी[6] न रह्हाय पिया रे, कह्हा बिना सुण मित्त। ...03

> प्रिय! मेरी बात तुम्हें अच्छी नहीं लग रही है,
> किंतु मुझसे कहे बिना रहा नहीं जाएगा। ॥3॥

मित्र! सुनो!

'आप गलत रास्ते पर 5 कि. मी. आगे आ गये हो।' यह वाक्य किसे अच्छा लगेगा? पैर दुःख रहे हैं, शरीर थक गया है, मैं रास्ता भूल गया हूँ, इसे स्वीकार करना बहुत कठिन है। पहली क्षण में तो जैसे कोई कानों में कील ठोक रहा हो, ऐसा लगता है। पर उसे स्वीकार किए बिना, और वापस मुड़े बिना कोई चारा ही नहीं होता।

विहार में कभी ऐसा हुआ होगा। फिर ऐसा वाक्य कहने वालों को यह भी पूछ लेते थे कि, "इसी रास्ते पर और आगे चलें, तो क्या उस दूसरे गाँव में नहीं पहुँच सकते?"

एक आग्रह होता है खुद के पकड़े हुए रास्ते को नहीं छोड़ने का। और दूसरा आग्रह होता है खुद के पकड़े हुए रास्ते को सही साबित करने का।

एक आग्रह है कि मुझ जैसा बुद्धिशाली तो रास्ता भूलेगा ही नहीं, इस भ्रम को पकड़ के रखना। और दूसरा आग्रह है कि, मैंने जो किया है, वह सोच समझकर ही किया है – ऐसा साबित करने का।

5. लगता है
6. मुझसे

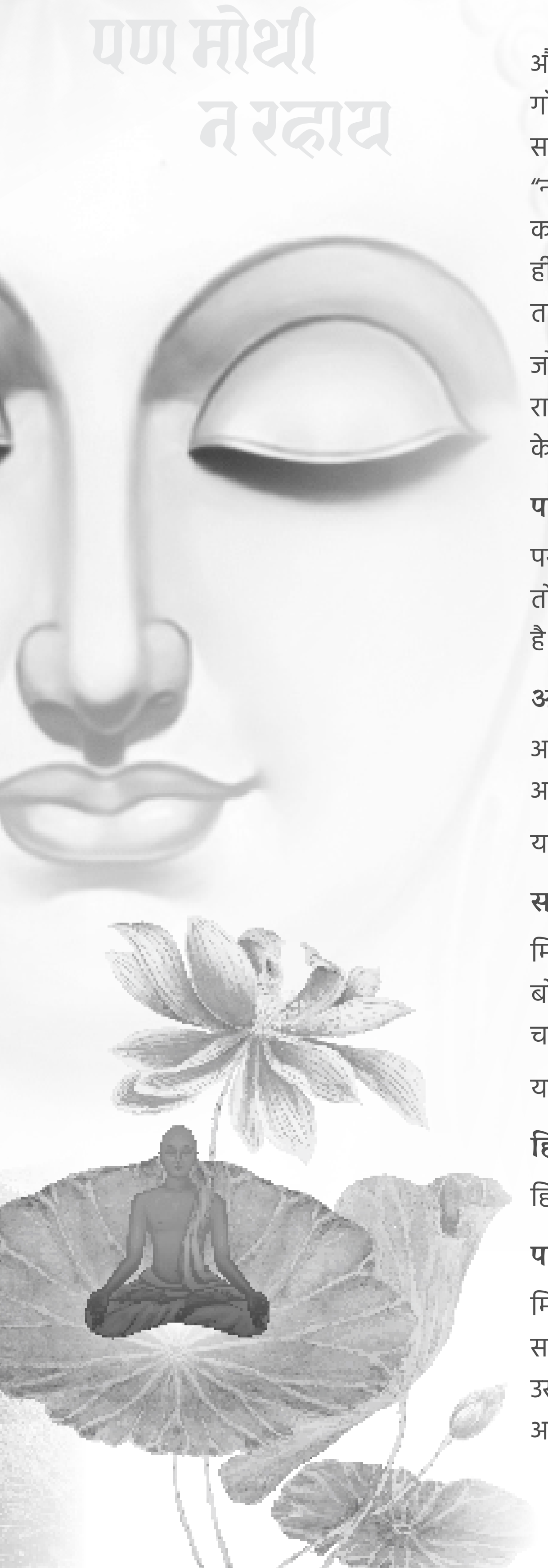

और जब उस गाँव का आदमी कहे कि, "नहीं बापू! दूसरे गाँव में जाने के लिए तो आपको बहुत घूमना पड़ेगा।" अब सारे आग्रहों की अवगणना करके पीछेहठ करना पड़ता है। "नहीं बापू, आपका गाँव तो उस तरफ आएगा, इस रास्ते से कहाँ से आयेगा?" और फिर पैरों को और मन को दोनों को ही मोड़ना पड़ता है। "यह तो उल्टा रास्ता है बापू।" बस फिर तमाम आग्रहों की गठरी सर से उतार फेंकनी पड़ती है।

जो संभव नहीं है, तो नहीं है। किंतु वह उल्टा रास्ता है, उस रास्ते पर सुख आता ही नहीं है। ऐसी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए इष्टोपदेश याद आ रहा है:

परः परस्ततो दुःख-मात्मैवाऽऽत्मा ततः सुखम्।

पर, पराया ही है। उससे दुःख ही मिलने वाला है। आत्मा तो आत्मा ही है, स्व ही स्व है। उससे ही सुख मिलने वाला है।

अशुभ तुमारे चित्त

आपको बुरा लगेगा, आपको अवश्य बुरा लगेगा। फिर भी आपसे यह कहता हूँ, क्योंकि आप मेरे मित्र हैं।

याद आता है नीतिसूत्र:

सत्यं मित्रैः प्रियम स्त्रीभि, रलीकमधुरं द्विषा।

मित्र के साथ सत्य बोलना चाहिए, पत्नी के साथ प्रिय बोलना चाहिए। दुश्मन के साथ झूठ और मधुर बोलना चाहिए।

याद आता है किरातार्जुनीयम्:

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः

हितकारी भी हो और अच्छा भी लगे, ऐसा वचन दुर्लभ है।

पण मोथी न रहाय

मित्र वह है, जो आपको सच्ची बात कहे बिना रह ही ना सके। जिसे बुरा बनने का डर नहीं है। मेरा बुरा लगेगा, उसकी परवाह नहीं है, जिसे अपनी प्रतिष्ठा से ज्यादा आपके हित में ज्यादा रस है, उसका नाम मित्र होता है।

घर अपने वालम कहो

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु की खोट;
फोगट तद किम लीजिये प्यारे, शीश भरम की पोट। ...04

> **प्राणनाथ आप ही कहो हमारे घर में किस चीज की कमी है?**
> **यदि घर में सब कुछ है, तो फिर व्यर्थ में**
> **सर पर भव-भ्रमणा की गठरी का भार क्यों उठाना है?**

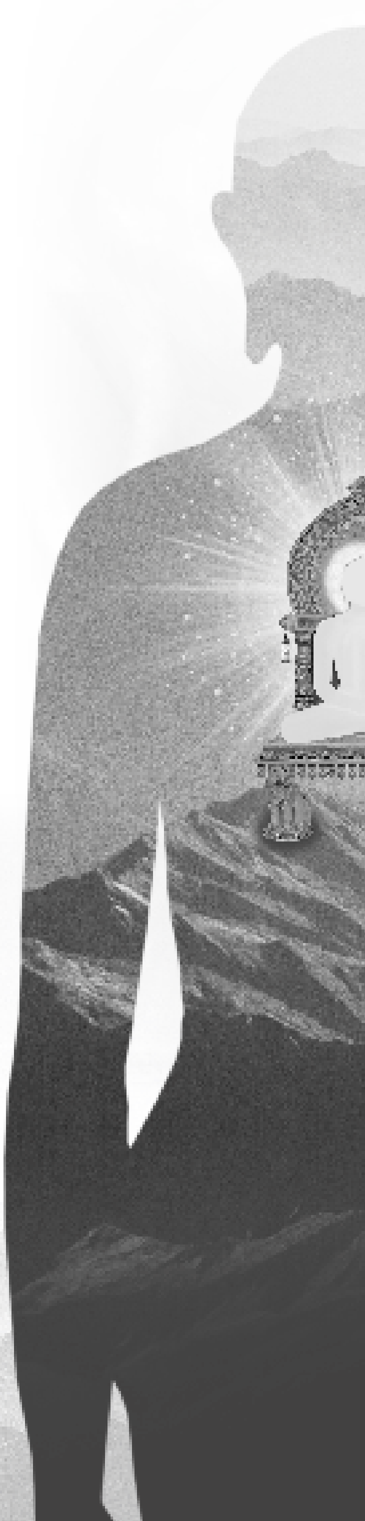

अनंत ऐश्वर्य की स्वामी आत्मा, परद्रव्य से किसी उपलब्धि की आशा रखे, तो यह इस विश्व की सर्वोत्कृष्ट दुर्घटना है। एक अरबपति किसी झोंपड़पट्टी में जाकर कहे कि, "मुझे बैठने के लिए कोई कपड़ा दे दो, मुझे बैठने के लिए साधन दे दो।" झोंपड़ी वाला कहता है कि, "हमने तो सुना है कि आपके घर में सोने का सिंहासन है।" उसे तो यह मजाक लगता है, किंतु है यह हकीकत। उसने खुद का घर अब तक देखा ही नहीं है, यह भी हकीकत है। घर पर सोने का सिंहासन है, और यह बैठने के लिए टाटपट्टी मांगने निकला है। पीछे उसकी पत्नी आती है, और आबरु की नीलामी होते हुए देखती है। पति का हाथ पकड़कर उसे जरा पीछे खींचती है, और धीमी आवाज में कहती है:

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु नी खोट?

शुद्धात्म-चेतना आत्मा से कह रही है कि, 'हमारे घर में किस चीज की कमी है?

शुद्ध ज्ञान रुपी स्वर्ण सिंहासन हमारे घर में पहले से ही है, लेकिन तुम अखबार, टीवी और फोन रुपी टाटपट्टी मांगने निकले हो?

अनंत दर्शन रुपी स्वर्ण सिंहासन हमारे घर में है, और तुम हिलस्टेशन, रिसॉर्ट, सिनेमा और फॉरेन टूर रुपी टाटपट्टी मांगने निकले हो?

अनंत सुख रुपी स्वर्ण सिंहासन हमारे घर में है, और तुम होटल, लारी, परफ्यूम और स्त्री रुपी टाटपट्टी मांगने निकले हो?

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु नी खोट?

उस अरबपति के दिमाग में अभी भी बात बैठ नहीं रही है। हमारे घर में कहाँ कुछ है? शायद कुछ होगा भी, लेकिन यह टाटपट्टी तो नहीं है

कोण वस्तु
रे, की खोट;

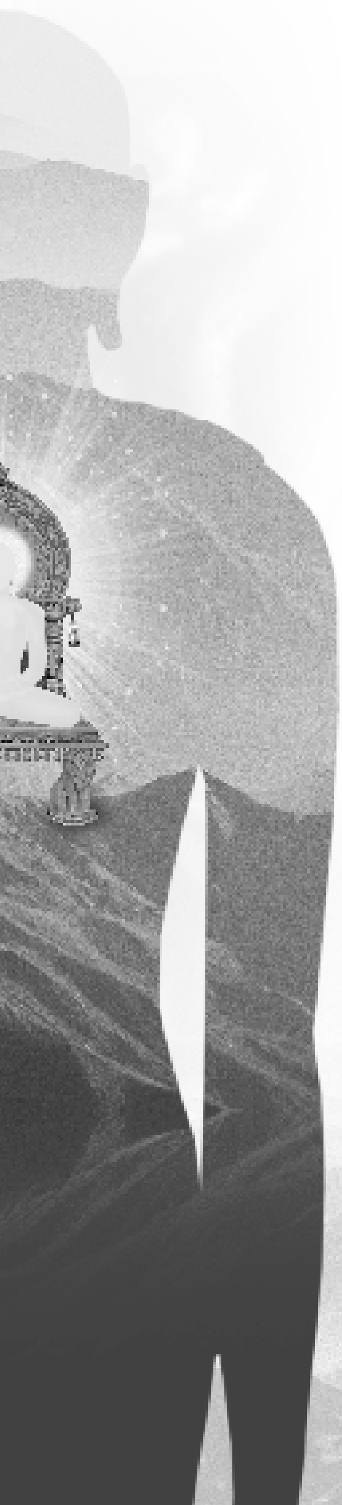

ना? तो फिर यह तो मांगना ही पड़ेगा ना? तो फिर मैं कहाँ कुछ गलत कर रहा हूँ?

पत्नी की आँखों में गुस्सा दिखाई देता है, वह दबे हुए किंतु दृढ़ स्वर में कहती है, “बैठने के लिए सोने का सिंहासन उपलब्ध हो, तो फिर इस दरी की जरूरत ही क्या है?”

अरबपति को अभी भी बात समझ में नहीं आती। उसकी परेशानी सुअर के जैसी है। शायद आपके विवाह समारोह में पच्चीस पकवान होगे, लेकिन विष्ठा तो नहीं है ना? तो विष्ठा मांगने तो जाना पड़ेगा ना? तो फिर मैं क्या गलत कर रहा हूँ?

विष्ठा नहीं है, यह भी हकीकत है, और विष्ठा का अभाव होना कमी नहीं पर खूबी है, दूषण नहीं पर भूषण है – यह भी हकीकत है। Actually, ‘विष्ठा नहीं है’, यही गलती हो रही है। क्या विष्ठा का होना जरूरी है? क्या वह एक आवश्यकता है? क्या उसके न होने का संज्ञान लेना चाहिए? विष्ठा के अभाव का दुःख होना, किसके दिमाग की उपज हो सकती है? ‘विष्ठा नहीं है’- यही सूअरत्व का परिचय है।

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु नी खोट?

सुअर का जवाब स्पष्ट है। ‘विष्ठा की कमी है।’ विष्ठा के बिना सब कुछ व्यर्थ है। असली पकवान तो विष्ठा है। वह नहीं तो कुछ भी नहीं है। विष्ठा की कमी होना प्रतीति का प्रतिबिंब है। तो यह कमी हकीकत में खड्डा नहीं, बल्कि भव-भ्रमण का जमाव है। अर्थ यह है कि, इस कमी को पूरी करने के लिए कुछ लाना नहीं है; मात्र निकालना है। और जब यह निकल जाएगी तो ‘विष्ठा की कमी’ नामक तृषा का स्थान ये तृप्ति ले लेगी।

कोण वस्तु नी खोट?

सब कुछ है। किसी भी चीज की कमी नहीं है।

याद आता है अध्यात्मोपनिषद् :

अन्तर्निमग्नः समतासुखाब्धौ, बाह्ये सुखे नो रतिमेति योगी।
अटत्यटव्यां क इहार्थलुब्धो, गृहे समुत्सर्पति कल्पवृक्षे? ॥

योगी समता के सुख सागर में डूबा हुआ होता है। उसे बाह्य सुख में रति क्यों होगी। घर के आँगन में ही कल्पवृक्ष पनप रहा हो, वहाँ धनलोभ से जंगल में कौन भटकेगा।

जंगल में भटकने का अर्थ यह नहीं है कि वह दरिद्र है, दुःखी है। जंगल में भटकने का अर्थ इतना ही है कि, उसने घर आँगन के कल्पवृक्ष को अब तक देखा ही नहीं है। भोजन समारोह को देखा, पच्चीस पकवानों को पहचाना। कहाँ यह सब कुछ, और कहाँ विष्ठा? जब इसकी प्रतीति हो गई, तो अब विष्ठा की खोज कैसे रहेगी?

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु नी खोट?

सब कुछ है। किसी भी चीज की कमी नहीं है।

याद आता है अध्यात्मोपनिषद् :

मोक्षोऽस्तु मा वाऽस्तु, परमानन्दस्तु वेद्यते स खलु।
यस्मिन्निखिल सुखानि, प्रतिभासन्ते न किञ्चिदिव।।

मोक्ष हो या ना हो, पर उसके परम आनंद का भीतर में अनुभव तो होता ही है। उसकी तुलना में बाहर के सभी सुख इतने तुच्छ लगते हैं, जैसे कि वे हैं ही नहीं।

जो स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हो, क्या उसे बारदाने की कमी का अनुभव होगा? क्या उसे बारदाने की कमी परेशान करेगी? अरे! बारदाने जैसी चीज़ दुनिया में है या नहीं, उसे क्या फर्क पड़ता है? जिसे आत्मा समझ में आ गई हो, उसकी यही दशा होती है। उसे तो राजा महाराजा 25 टाटपट्टी लेकर बैठे हुए लगते हैं, और चक्रवर्ती 500 टाटपट्टी लेकर बैठे हुए दिखते हैं। और इंद्र उसे 5,000 बारदानों के गोडाउन की चाबी लेकर घूमते हुए दिखाई देते हैं।

पूरी दुनिया एक दूसरे से पूछ रही है कि, तुम्हारे पास कितने बारदाने हैं? पूरी दुनिया उसी की तलाश कर रही है कि और बारदाने कहाँ से मिलेंगे? पूरी दुनिया एक दूसरे की ईर्ष्या कर रही है, "इसके पास तो इतने बारदाने हैं।"

और योगी? वह तो सोने के सिंहासन पर बैठ कर मुस्कुरा रहा है। बारदानों के पीछे की दौड़ उसे शून्य की दौड़ लग रही है। बारदानों की खोज उसे व्यर्थ की खोज नजर आ रही है। बारदानों की प्राप्ति का हर्ष उसे पागल की मुस्कुराहट लग रही है। बारदाना न होने का अफसोस उसे सूअर की विष्ठावंचितता का अफसोस लग रहा है। और इन सभी में से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि, जिसके घर में स्वर्ण का सिंहासन ना हो। इस सत्य का योगी को साक्षात्कार हो रहा है।

(क्रमशः)

गोडीजी का इतिहास - 6

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

काजलशा का काला कलेजा

जिनमन्दिर के निर्माण में मात्र पत्थर ही नहीं लग रहे थे, बल्कि मेघाशा के मनोरथ भी लग रहे थे। प्रभु के आगमन से गोड़ी गाँव अब गोड़ीपुर बनने लगा था। यह गाँव अब किसी बड़े नगर जैसा सुशोभित दिखाई देने लगा था। अचिन्त्य महिमा-वान श्री पार्श्वनाथ प्रभु अब श्री गोड़ी पार्श्वनाथ के नाम से जन-जन के हृदय में निवास करने लगे थे।

जिनालय की भव्यता देखकर सभी लोग मेघाशा के भाग्य, भक्ति और भावना की अनुमोदना करते थकते नहीं थे। प्रशंसा के पुष्पों की सुगन्ध गोड़ीपुर से भूदेशर पहुँची। काजलशा यह प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या से भर उठा। 'मेघाशा के साथ मेरा यश भी चारों ओर फैलना चाहिए', इस गलत इरादे से वह अपने विशाल परिवार और नौकर चाकरों के साथ गोड़ीपुर में मेघाशा के घर जा पहुँचा।

उदित होते सूर्य के समान प्रिय मेघाशा ने उसका स्वागत किया और उसे उचित स्थान पर बिठाया। कुछ औपचारिक बातें करने के बाद काजलशा ने अपने कलेजे की कोठरी में से काली बात को सुनहरा रंग देते हुए प्रस्तुत किया:

"तुम जिस जिनमन्दिर का निर्माण करवा रहे हो, उसमें मेरा आधा भाग रखो, जितने पैसे लगेंगे मैं दे दूँगा। अब अपने साथ मेरा नाम भी जोड़ दो।"

मेघाशा, काजलशा की यह बात सुनकर आश्चर्य-चकित हो गया। किन्तु उसने पूरी स्पष्टता और साहस के साथ गौरवपूर्ण उत्तर देते हुए कहा कि,

"जिस प्रभु की प्रतिमा के लिए तुम 'पत्थर' शब्द का इस्तेमाल कर चुके हो, उस प्रभु के प्रति तुम्हारा यह भाव कैसे उत्पन्न हुआ? मुझे तुम्हारे पैसे की जरा भी जरूरत नहीं है। प्रभु के प्रभाव से मेरे पास समुचित धन है, और यक्ष की सहायता भी है। और हाँ, वैसे भी ये प्रभु तो मेरे पिताजी ने भरवाए थे,

इसलिए मुझे इस कार्य में कोई भागीदारी नहीं रखनी। मैं जिस समय प्रभुजी को लेकर आया था, उसी समय मैंने हिसाब में पूरा पैसा चुकता कर दिया था, इसलिए अब इसमें आपका कोई अधिकार नहीं रहता।"

अपना बुरा इरादा नाकामयाब होता देखकर काजलशा मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ। किन्तु ऊपर से शान्त प्रवृत्ति दिखाते हुए वहाँ से विदा हुआ। भूदेशर आते-आते उसने मन ही मन अनेक प्रकार के आयोजन किए। ईर्ष्या और अपमान की आग में जलते हुए काजलशा यश और मान की भूख में मेघाशा को यम की शरण में पहुँचाने के अधम मार्ग को अपनाने के लिए तत्पर हुआ।

घर पहुँच कर उसने बगुले की भांति बाहर से उज्ज्वल और मन में मैली मुराद रखते हुए अपनी पुत्री सुव्रता* के विवाह का आयोजन किया, और विवाह में मेघाशा को बुलाकर विषप्रयोग के द्वारा उसके जीवन का अन्त करने का षड्यंत्र रचा। विवाह के मांगलिक प्रसंग पर उसने अपनी बहन और बहनोई को भांजे के साथ पधारने हेतु निमन्त्रण भेजा।

सावधान! मेघाशा सावधान!

जिनमन्दिर के निर्माण का कार्य तीव्र गति से चल रहा था। मूलनायक का गर्भगृह, पबासन, रंग-मण्डप, चौकी आदि तैयार हो चुके थे। शिखर तथा सामरण के कार्य बाकी थे। शिल्पी आदि भी अपने हृदय और प्राण झौंककर अविरत कार्य को आगे बढ़ा रहे थे।

मेघाशा अपने मनोरथों का मंथन करते हुए रात्रि के समय निद्राधीन था, उसी समय खेतलवीर यक्ष स्वप्न में प्रकट हुए और कहा,

"मेघाशा! सावधान रहना। तुम्हारा आयुष्य अल्प है। विषप्रयोग से तुम्हारी मृत्यु होगी। प्रभुजी की प्रतिष्ठा करके सुकृत कमा ले, और अपना जीवन सफल कर ले।" संकेत देकर यक्ष अन्तर्ध्यान हो गया।

मेघाशा प्रातःकाल में उठा, अपने प्राभातिक कार्य करके अपने स्नेही स्वजनों और संघ को आमन्त्रित किया। सबको सम्बोधित करते हुए उसने अपने मन की बात कही,

"जिस घड़ी की आप सभी आतुरता से राह देख रहे थे, ऐसे श्री गोड़ी पार्श्वनाथ भगवान को सिंहासन पर विराजित करने, प्रतिष्ठित करने की मेरी भावना है। गर्भगृह, पबासन आदि तैयार हो चुके हैं। अब भव्य अष्टाह्निका महोत्सव पूर्वक तथा अत्यन्त ठाठ-बाट के साथ प्रभु की प्रतिष्ठा करने के मेरे मनोरथ में आपका भी पूरा सहयोग रहे, ऐसी आपके समक्ष नम्र विनती करता हूँ।"

श्री संघ ने कहा, शुभस्य शीघ्रम्, अच्छा कार्य है, शीघ्र कीजिए।

मेघाशा ने श्रेष्ठ मुहूर्त निकलवाया, भव्य मण्डप बनवाया, अनेक गाँवों के संघ को आमन्त्रित किया, चौक पुराई, ढोल नगाड़े बजवाए, श्री संघ

* गुणवंती नाम भी प्राप्त होता है

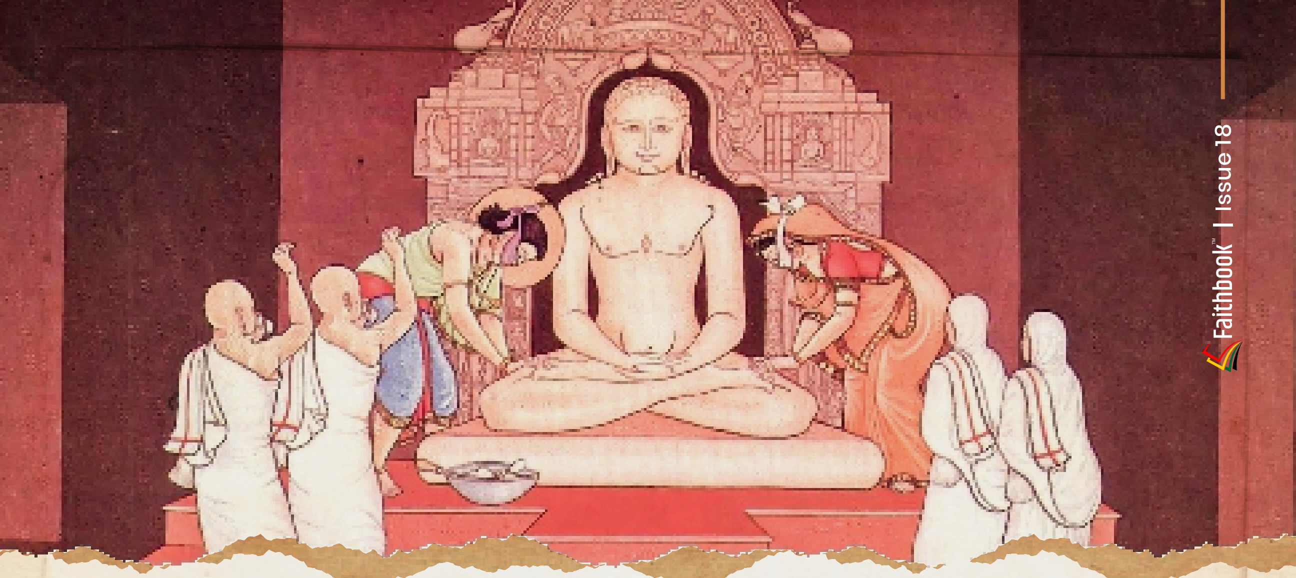

का स्वामीवात्सल्य किया, विपुल मात्रा में धन का सदुपयोग किया।

वि. सं 1494 की महा सुदी 5, गुरुवार के शुभ मुहूर्त्त पर उसने श्री गोड़ी पार्श्वनाथ प्रभु को प्रति-ष्ठित किया। राजा उदयपाल भी इस शुभ प्रसंग पर उपस्थित थे। राजा तथा श्री संघ ने मेघाशा को 'संघवी' पद अर्पण करके पगड़ी पहनाई।

संघवी मेघाशा की यशकीर्ति की बातें अब काज-लशा से जरा भी सहन नहीं हो रही थी। दांवपेच और प्रपंच के जाल बुनकर उसने अपनी पुत्री सुव्रता के विवाह का मुहूर्त निकलवाया। तुरन्त विवाह तय करके कुमकुम पत्रिका लिखी, बहन-बहनोई को सपरिवार आमन्त्रण दिया।

मेघाशा ने सन्देश वाहक को सविनय कहा, "जिना लय के शिखर का कार्य चल रहा है। जब तक यह कार्य पूरा नहीं होता मेरा यहाँ से जाना सम्भव नहीं है। काजलशा की बहन और मेरे दोनों पुत्र विवाह में अवश्य आएँगे। मृगादेवी अपने दोनों पुत्रों के साथ भूदेशर पहुँची। बहनोई मेघाशा की अनुप-स्थिति से काजलशा बेचैन हुआ।

न्हवण जल का प्रभाव

जिनमन्दिर के शिखर के कार्य की देख-रेख हेतु मेघाशा गोड़ीपुर में अकेला रुका। बहनोई मेघाशा के ना आने के कारण काजलशा स्वयं भूदेशर से गोड़ीपुर आया। काजलशा को इस प्रकार अचा-नक आता देख मेघाशा आश्चर्यचकित हुआ। हृदय में विष और मुख पर अमृत जैसे शब्दों से काजलशा ने मेघाशा से बात की,

"तुम तो बहुत बड़े आदमी हो गए हो, अब मुझ गरीब की कुटिया में क्यों आओगे? जिनालय के कार्य के लिए थोड़े दिन सूचना जारी कर दो, उस हिसाब से कार्य होता रहेगा। लेकिन तुम्हारे बिना मेरे घर में होने वाले विवाह में शोभा कैसे आएगी? इसलिए तुम्हें तो आना ही पड़ेगा। मैं स्वयं तुम्हें लेने के लिए आया हूँ और तुम्हारे बिना मैं वापस नहीं जाऊँगा।"

काजलशा के कपट भरे वचन सुनकर सज्जन और सरल हृदय वाले मेघाशा ने अपनी सहमति दी। घर और जिनालय से जुड़े कार्यों में मग्न मेघाशा को

पता ही नहीं चला कि कब शाम हुई। रात्रि के समय साला और बहनोई अलग-अलग शयनकक्ष में विश्राम करने चले गए।

मध्य रात्रि को खेतलवीर यक्ष मेघाशा के शयन कक्ष में प्रकट हुआ और कहने लगा,

“मेघाशा! मैंने तुम्हें पहले ही बताया था कि तुम्हारा आयुष्य अल्प है। तेरा साला काजलशा तेरे प्रति ईर्ष्या रखता है, और तुझे यमलोक पहुँचाना चाहता है। इसीलिए यह तुम्हें भूदेशर ले जाने के लिए इतना आग्रह कर रहा है।”

मेघाशा को विश्वास नहीं हुआ कि काजलशा अपनी ही बहन को विधवा बनाने के लिए कैसे तैयार हो गया।

यक्ष ने बात आगे बबढ़ाई

“सुन, तू जरा भी भय मत रखना। श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथ प्रभु की तुझ पर अत्यन्त कृपा है। तू प्रभु का न्हवण जल अपने साथ ले जाना। दूध या दूध से बनी किसी भी चीज का सेवन मत करना। तुझे विष का असर नहीं होगा।”

यक्ष की बात सुनकर मेघाशा आश्वस्त हुआ।

अगले दिन सूर्य उदित हुआ, आकाश स्वर्णिम रंगों से रंगा हुआ था। काजलशा और मेघाशा ने प्राभातिक कार्य पूर्ण करके श्री गोड़ी पार्श्वनाथ प्रभु की अन्तर्मन से भक्ति की। मेघाशा ने प्रभु का न्हवण जल चांदी की डिबिया में भरा और अपने घर आया। मध्याह्न के समय तक काजलशा ने बैलगाड़ी तैयार कर ली थी और मेघाशा को साथ लेकर चलने के लिए आतुर होने लगा। मेघाशा आवश्यक सामग्री तैयार करने लगा, किन्तु इंतजार कर रहे काजलशा के आतुरता भरे शब्दों से वह व्याकुल हो गया और न्हवण जल से भरी डब्बी अपने साथ लेना भूल गया।

बैलगाड़ी में बैठने के बहुत समय बाद मेघाशा को याद आया, किन्तु अब वापस जाना सम्भव नहीं था।

अन्ततः काजलशा अपना तय किया हुआ कार्य करके ही रहा, और मेघाशा को भूदेशर अपने घर लेकर गया।

(क्रमशः)

इन्फोर्मेंशन न लें, पर ज्ञान लेते रहें।

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

प्रणाम मित्रों!

परमात्मा बनने के 20 Steps की हम बात कर रहे हैं। इस लेख की शुरुआत में आपको जरूर कुछ नया लगा होगा।

हर बार 'Hello Friends' कहकर शुरु होने वाली अपनी बात आज 'प्रणाम' शब्द के साथ प्रारंभ हुई है।

चूँकि आज की बात **'अभिनव ज्ञान'** की है, तो आज हमें आपको एक अभिनव, यानि कि नया ज्ञान देना है। जब भी कोई जैन अन्य जैन से मिलता है, तब वह 'हाय हेलो' नहीं बोलता, बल्कि 'प्रणाम' शब्द कहता है। और जब कोई जैन किसी अन्यधर्मी से मिलता है, तब वह 'जय जिनेन्द्र' से बात की शुरुआत करता है। यह है एक 'अभिनव ज्ञान' जो शायद आपको पता नहीं होगा।

हम जिसे नहीं जानते थे, वैसा कुछ नया जानने को मिले, उसे कहते हैं **अभिनव ज्ञान।**

हर दिन सुबह सवेरे सूरज के उजाले धरती पर गिरे, उसके साथ हमारे मन में ज्ञान की नयी किरणें फैलनी चाहिए। किसी ने कहा है कि, जिन्दगी के अंत तक अगर 'युवा' 'यंग मैन' रहना चाहते हो, तो रोजाना कुछ न कुछ नया जानते रहो, सीखते रहो। जो व्यक्ति रोज सुबह कुछ नया जानने, ढूँढने, खोजने, छानबीन करने की अदम्य इच्छा के साथ जगता है, और रात को जो ढूँढा, जो पाया, जो उपलब्धि हुई, जो ज्ञान की पूंजी कमाई उसके कारण खुद ब खुद अपने आपको शाबाशी देता हुआ संतोष के साथ सोता है, उसे डायबिटीज़ का राक्षस, बी.पी. का भूत, अलसर की डायन और टेन्शन की चुड़ैल हमेशा दूर ही दूर भागते रहते हैं।

वास्तव में रोग हमारे शरीर में सामने से नहीं आते, हम उनको न्यौता देते हैं, हम ही उन्हें बुलावा भेजते हैं। निकम्मे बैठकर, यूँ ही इधर-उधर के गप्पें

मारकर, चौराहे पर बैठ आती जाती पूरी आवाम को आँखे फाड़-फाड़कर देखकर, या फिर मोबाईल में फालतू गेम खेलकर न देखने लायक लिंक को देख-देखकर, और हमारा मन बिगाड़कर। कुदरत ने गुलशन बनाकर दिया हुआ था मन, लेकिन हमने खचाखच गन्दगी भर कर उसे खंडहरों से भरा उजड़ वीरान बना देते है। और हमें कमजोर पाकर ही रोग रुपी आतंकवादी आतंक फैलाने चले आते हैं शरीर के इस मकान में।

अभिनव ज्ञान और अभिनव जानकारी (न्यू इन्फोमेंशन) में बहुत बड़ा लेकिन फिर भी बहुत बारीक अंतर है। ज्ञान आपको संतोष, प्रेम, प्रसन्नता और आनंद से भरपूर भर देता है, जबकि जानकारी आपको नया सिखाती जरूर है, पर वो सीखा हुआ आपको आनंद दे, यह जरूरी नहीं। आतंकवादी को बम बनाना और फोड़ना सिखाया जाए तो क्या होगा? वह और ज्यादा शैतान बनेगा, और दुनिया ज्यादा त्रस्त बनेगी।

मैंने सुना है कि जापान पर अमेरिका ने अणु बम फोड़े थे, उसके बाद आइंस्टाइन बोले थे कि मैंने अणु-विभाजन की प्रक्रिया को दुनिया के सामने रखकर बहुत बड़ी गलती कर दी। आपको ज्ञान देने वाले आपके माँ-बाप, शिक्षक, या गुरु तब बड़े आहत हो उठते हैं जब उनके दिये हुए ज्ञान का आप दुरुपयोग करते हैं।

तो, इन्फोर्मेशन न लें, पर रोज नया-नया ज्ञान लेते रहें। आपके मित्रों से, मोबाईल से, स्कूल से जो जानने को मिलेगा, वह ज्यादातर इन्फोर्मेशन के फोर्म में होगा, और आपके माँ-बाप से, गुरुदेव से, पाठशाला से या कल्याणमित्रों से आप जो कुछ भी जानेंगे, वह ज्ञान के स्वरुप में होगा।

कितनी सरल और सहज प्रक्रिया बता दी परमात्मा बनने की – अभिनव ज्ञान।

रोज कल्याणमित्रों के साथ संपर्क रखिए, कुछ नया जानिए, गुरु भगवंतो को वंदन करने जाइए, जिंदगी जीने की नई नई टिप्स लेते रहिए, पाठशाला में जाकर सूत्र सीखिए, तत्त्वज्ञान सीखिए। जैन धर्म में ज्ञान का इतना अगाध सागर पड़ा है, कि यदि आप रोज नये-नये पाँच विषय जानेंगे, और आपकी यदि सौ साल की आयु हो, यानि कि आपके पास 36,500 दिन हो, तो आपकी उम्र पूरी हो जाएगी, पर जिनशासन का ज्ञान पूरा न हो पाएगा।

तो मित्रों!

जब भी समय मिले उसे यूँ ही मत गँवाना,
कुछ नया जानकर ही सिर्फ
यदि परमात्मा बनने का मौका मिलता है,
तो उसे गंवाना नहीं चाहिए...

आपको क्या लगता है?

ऐसी दशा हो भगवन्!

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक नौजवान नाविक की नाव में एक श्रीमंत सेठ सफर कर रहे थे। जब नाव बीच मझधार में पहुँची, तो भयंकर तूफान आया। नाव आकाश में हवा में उछलने लगी। सेठ तो बुरी तरह से डर गये, उन्हें तो अपनी नजरों के समक्ष यमराज दिखने लगे। नाविक जरा भी नहीं डरा। सद्भाग्य से दोनों सुरक्षित बच गये।

सेठ ने पूछा : नाविक! तेरे पिताजी की मृत्यु कहाँ हुई थी?

नाविक ने कहा : इसी दरिया में, ऐसे ही किसी तूफान में उनकी मृत्यु हुई थी।

सेठ : अच्छा! उनके पिता की मृत्यु कैसे हुई?

नाविक : इसी दरिया में।

सेठ : तो फिर तेरी सात पीढीयाँ इस दरिया में डूब कर मृत्यु की शरण हुई, तू ऐसा कहना चाहता है?

नाविक : हाँ, हाँ, इसी दरिया में ही उन सभी की मृत्यु हुई थी।

सेठ : ओहो! तो फिर तुझे इस दरिया में मौत का डर नहीं लगता?

कुछ देर रुककर नाविक ने सेठ से पूछा : सेठ! आपके पिता की मृत्यु कहाँ हुई?

सेठ : हॉस्पिटल की बैड पर।

नाविक : सेठ! उनके पिताजी?

सेठ : घर के बिस्तर पर।

नाविक : तो सेठ! आपकी सात पीढ़ियों की विदाई बिस्तर पर ही हुई है, आप ऐसा ही कहना चाहते हैं ना?

सेठ : हाँ! हाँ!

नाविक : सेठ! तो फिर आपको बिस्तर पर सोते समय मौत का डर नहीं लगता?

सेठ क्या बोलते? चुप हो गये!

आज इन्सान को मौत का डर है, पर मरकर कहाँ जाना है, उसका भय नहीं है।

'प्रेम' नाम का ढाई अक्षर सभी को अच्छा लगता है, पर 'मृत्यु' नाम का ढाई अक्षर अच्छे-अच्छे मांधाता, सत्ताधारी, शक्तिशाली, श्रीमंतो को भी कँपकँपा देता है।

श्रमण भगवान महावीर देव कहते हैं कि,

**"जन्म विकृति है, मृत्यु प्रकृति है,
और इन्सान का चारित्र - संस्कृति है।"**

जन्म लिया है तो मृत्यु तो होगी ही ना!

तो मृत्यु का डर क्यूँ रखना? मृत्यु को रोकना हमारे बस में नहीं है, पर मृत्यु को सुधारना तो अवश्य हमारे हाथ में है। जिसकी कोई गारंटी नहीं है, उसका नाम जिंदगी है, और जिसकी 100% गारंटी है उसका नाम मृत्यु है।

अब, जिसे मरकर सद्गति में जाना है, उसे अच्छी तरह से मरना पड़ेगा। और जिसे अच्छी तरह से मरना हो, उसे अच्छी तरह जीना पड़ेगा। तो अच्छे से जीने का मतलब क्या है?

अच्छा Education पाना, अच्छी Job पाना, अच्छी लड़की को पाना, अच्छा Area, flat, फर्नीचर, कार, यह सभी कुछ अच्छा मिल जाये उसे अच्छा जीवन कहते हैं? नहीं।

भगवान कहते हैं, यह सब कुछ अच्छा मिल जाने के बाद भी आप अच्छा जीवन ही जीयेंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं है। यह सभी अच्छा ही मिलेगा वैसा अपना पुण्य नहीं है, और शायद सब कुछ अच्छा मिल भी जाये तो भी अच्छा ही जीवन जीयेंगे उसका कोई भरोसा नहीं है।

इसलिए भगवान कहते हैं, बाहर का अच्छा मिलने से, जीवन अच्छा नहीं गुजरता, पर मृत्यु को नजरों के सामने रखने से अच्छा जीवन बिता सकते हैं।

**"मौत जब तक नजर नहीं आती,
जिंदगी तब तक राह पर नहीं आती।"**

"प्रभु की शरण" और "मृत्यु का स्मरण" यदि जीवन में होगा तो पापकार्य और पापबुद्धि जीवन में प्रवेश नहीं कर सकेंगे, और सत्कार्यों और धर्मबुद्धि चौबीसों घंटे हाजिर रहेंगे।

एक जगह पर कहीं लिखा गया था कि,

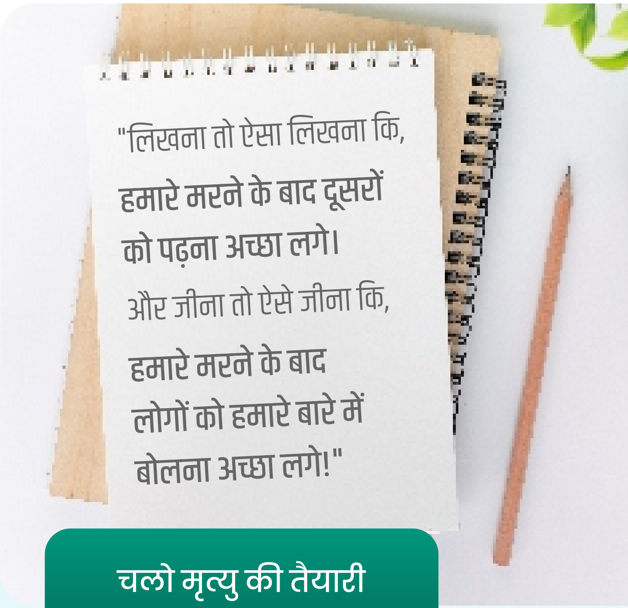

**चलो मृत्यु की तैयारी
आज से ही शुरू कर देते हैं।**

**ऐसी दशा हो भगवन्! जब प्राण तन से निकले...
गिरिराज की हो छाया, मन में न होवे माया,
तन से हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से निकले!!!**

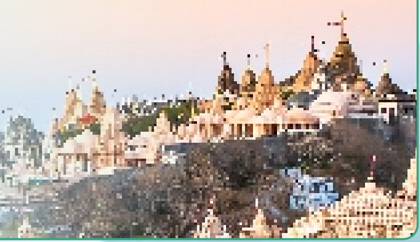

Temper : A Terror – 16

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(सामने नगर के आरक्षक चौकीदार दिखे। उनके चेहरे पर का गुस्सा देखकर मित्रानंद को अपनी परिस्थिति का ख्याल आया। उसकी आंखों में आंसू छलक आए। फिर से एक बार कैद में बंद होने का भय उसकी आंखों में छा गया। आगे क्या होता है पढ़िए...।)

इंद्र विमान जैसा रथ राजमहल के प्रांगण में तैयार खड़ा हुआ था। धूमधाम से तैयारी चल रही थी। सद्गुरु के आगमन के समाचार राजा को मिलने के बाद एक अजीब-सा रोमांच अनुभव हो रहा था।

यह रोमांस और किसी का नहीं, पर अपनी अदम्य जिज्ञाशा के समाधान का था।

"राजन! तैयार..." अपनी प्राणप्रिय रानी रत्नमंजरी की आवाज सुनकर राजाने मुड़कर देखा। रत्नमंजरी के चेहरे पर भी आनंद का सैलाब छलक रहा था।

"हां... बस! अब इतने दिनों से जो बात सता रही थी उसका समाधान मुझे मिल जाएगा। तैयार..." राजा के चेहरे पर आशंका सह स्मित आ गया। 50 दिनों के उन कालखंड में कितनी चीजें छुपी हुई होगी- यह जानने और ना जानने की मिश्रभावना राजा की हो रही थी। शायद कुछ अशुभ निकलेगा तो?

"चलिए राजन! सारा इंतजाम हो चुका है।... अब बस आप प्रयाण करो उतनी ही देर..." सामने आए हुए प्रधान की ओर राजा ने देखा। दो मिनट तक राजा बिना कोई प्रतिभाव के खड़ा रह गया। राजा के ऐसे वर्तन को देखकर किसी ने कुछ नहीं कहा।

अमीट भूतकाल की ओर कुछ क्षण के बाद राजा ने कदम बढ़ाया।

गंगोत्री के प्रवाह की तरह मित्रानंद की आंखों से अपने दुर्भाग्य के अश्रु निरंतर बह रहे थे। उस समय साथ देने वाले भाग्य ने इस समय मित्रानंद को दगा दे दिया था।

आज सुबह में जब मित्रानंद उठा था, तब वहां के दृश्य को देखकर वह कुछ पल के लिए स्तब्ध हो गया था। चारों तरफ शस्त्रधारी सैनिक खड़े हुए थे।

"अय नमकहराम! बोल कौन है तू? असहय गालीवाले शब्द सुबह उठते ही मित्रानंद के कानों में पडे थे। कौन बोल रहा है? क्या बोल रहा है? उसकी कुछ समझ आए उसके पहले ही मित्रानंद के खुले शरीर पर चाबुक का प्रहार हुआ। पीड़ा की एक गहरी सिसक उसके मुंह से निकल पड़ी।

चाबुक मारनेवाली व्यक्ति उसके सामने आ गई। अच्छे-अच्छे कांप जाए वैसी उसकी पडछंद काया थी। मित्रानंद को उसमें अपनी मौत नजर आ रही थी।

'क्यों, क्या देख रहा है? कभी इंसानों को देखा तो है ना? कि इस तरह गटर की नालियोंमें चोरों की तरह घूमना ही तेरा काम हैं? हं...'

मित्रानंद के यंत्र जैसे मस्तिष्क के सामने खड़ी हुई पडछंद व्यक्ति के मन में चल रहे संशय को पढ़ लिया था। पर, प्रत्युत्तर देने की शक्ति को जैसे उसकी वाचा से किसीने छिन लिया हो, ऐसा लग रहा था।

"देख! तू क्या कर रहा था, उस गटर में, यह बात मुझे नही बताई तो समझ लेना कि आज तेरी हालत श्मशान में सड रहे हाड़पिंजरो से भी खराब हो जाएगी। बोल कौन से राज्य का तू गुप्तचर है? बोल..." पडछंद व्यक्ति ने फिर से चाबूक उठाई।

उस चाबूक की प्रहार के भय से भयभीत हुए मित्रानंदने अपनी पूरी किताब खोल दी थी, पर सब कुछ असफल हुआ था। शव का बोला हुआ वाक्य सफल होने जा रहा था।

वोही नगर, वोही वृक्ष, वोही जगह पर अभी मित्रानंद खड़ा था। उसे जीने की आशा ना के बराबर दिखाई दे रही थी। मित्रानंदने रोते-रोते आखिरी पांसा फैंका।

"मुझे छोड़ दो... आप मुझे छोड़ दोगे तो आपको मेरे राज्य से बहुत बड़ी जागीर दूंगा..." मित्रानंद के मुंह पर देखकर फांसी देने वाला पहलवान हँसने लगा।

"अब तो मुझे जागीर मिले या ना मिले, तुझे तो भगवान की जागीर मिलने वाली ही है।... हँ...हँ... हँ..." शरीर से प्राणवायु निकाल दे ऐसा मुक्का मित्रानंद के पेट पर पड़ा। उसे खून की उल्टी हो गई।

उसकी गर्दन को रस्सी में पहलवानने परो दिया। छूटने के फोगट के हाथ - पैर मित्रानंद मारता रहा। पर, यमराज ने आज निश्चय कर दिया था।

पहलवान ने अपने हाथ की रस्सी छोड़ी। मित्रानंद का शरीर ऊपर की ओर उठा। साथ ही उसका जीव भी उपर उठता गया।

सुरपुष्प जैसी महक उद्यान में से चारों और फैल रही थी। अंदर बैठे प्रभावक व्यक्ति के गुणों की सुगंध उस महक में व्यक्त हो रही थी। समग्र वातावरण को उस महक ने आशामय बना दिया था।

राजा ने भी निराशामय सुंदर रथ से उतरकर अपने पैर उद्यान की आशापूर्ण धरती पर रखे। एक अकथ्य आत्मानंद की सहज अनुभूति राजा को हुई। उसके मन में चल रहा संताप शांत हो गया।

उद्यान के प्रवेश द्वार पर स्वर्ण, रुपे और रत्नों से रचित अनेक रथों की पंक्ति खड़ी थी। राजा उन रथों की समृद्धि को देखकर दंग रह गया। अंदर बैठे पुरुष की ओजस्विता उन रथों में से बिना कुछ कहे व्यक्त हो रही थी।

"राजन! सद्गुरु की ओर प्रस्थान करते हैं..." बगीचे की जगमगाहट से राजा को बाहर लाने के लिए रानी ने जानबूझकर शब्दों का सहारा लिया।

"ओह..." कुछ क्षोभित होकर राजा बगीचे की ओर चलने लगे। राजा ने सामने घटादार वृक्षो की सुंदर पंक्तियाँ देखीं। उसके नीचे एक महात्मा बैठे हुए थे, जैसे कि वे वृक्ष के साथ अभिन्न हों। उनके आगे नगर के समृद्ध श्रेष्ठी, जो पूरे दिन अपने सात मंजिला आलीशान महल में ही लेटे रहते थे, वे सभी शांत-प्रशांत बैठे हुए थे।

राजा के परिवार और परिकर-जनों के कदम पड़ते ही उस नीरव शांति में भंग हो गया हो, ऐसा राजा को लगा। पर उस अशांति को शांत करने वाली मधुर ध्वनि राजा को सुनाई दी। सद्गुरु की वाणी की मिठास ने राजा को छू लिया। बिना शब्दों की उस ध्वनि में ऐसी मोहकता थी कि, निराशा में गर्त हुए व्यक्ति को भी आशा की किरण दिखा दे।

बिना आवाज किए राजा सभा में बैठ गया। उनके परिवार को भी ऐसा करने का निर्देश राजा के बिना कहे ही दे दिया गया।

"राजन्! आप यहाँ पधारिए।" अपने मित्र, मित्रानंद को भी भुला दे, सद्गुरु के मुख से ऐसी सहानुभूतिपूर्ण आवाज राजा के कर्ण में अवतरित हुई। कोई अदृश्य शक्ति जैसे राजा को खींच रही हो, वैसे राजा आगे जाकर बैठ गया।

"यत्र वा तत्र वा यातु, यदा तदा करोत्वसौ।
तथापि मुच्यते प्राणी, न पूर्वकृतकर्मणः।।

“सभाजनों!" वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को छू लेने वाले शब्द सद्गुरु के मुख से निकले।

"आप चाहे जो भी कर लो, आप चाहे कहीं भी चले जाओ, किन्तु प्राणी कभी भी अपने पूर्व में किए गए कर्मों से पीछा नहीं छुड़ा सकता है। कर्म का गणित अचल है।" राजा के दिल को सताती हुई बात को ही वाचा देते हुए सद्गुरु ने कहा।

"यह दुनिया कठपुतली है। उसकी डोर कर्म के हाथ में है। कर्म जैसे नचाए, वैसे ही सभी जीव नाचते हैं। और इसीलिए..." एक अटल निर्णय सद्गुरु के चेहरे पर राजा को दिखाई दिया। "...जो किया है, उसे भुगतना पड़ेगा..."

अस्खलित धारा से चल रही वाणी कुछ क्षणों के बाद विरमित हुई। इतने में एक सेठ खड़ा हुआ। उसे वर्षों से पुत्र के अभाव का प्रश्न परेशान कर रहा था। शेठ ने प्रश्न पूछा, और सद्गुरु ने त्रिकालज्ञानी की तरह उसका प्रत्यु-त्तर दिया। उसके बाद तो प्रश्नों की श्रेणी चलती रही।

सद्गुरु की सज्जनता खिलती गई और राजा के मन में श्रद्धा के सुमन खिलते गए। अंत में राजा ने अपनी व्यथा को वाचा दी।

"सद्गुरु! मेरे मित्र मित्रानंद का क्या हुआ?"

कुंभकर्ण को भी पीछे छोड़ दे ऐसी कदावर देह वाला गोपालक अपने हाथ में डंडा लेकर खड़ा था। चारों तरफ वट के वृक्षों से मैदान घिरा हुआ था। उनकी शाखाएँ धरती को चीरकर मानो अपना स्वतंत्र अस्तित्व खड़ा करने के लिए प्रयास कर रही थीं।

"ऐ मोटे! बस खा-खाकर भैंसे जैसा हो रहा है। तेरे पेट जैसा बल यदि तेरे हाथ में हो, तो ले, इस गिल्ली को मार..." पास खड़े सारे ग्वाले पागलों की तरह हँसने लगे। कुंभकर्ण ग्वाले के चेहरे के भाव बदलने लगे।

"अरे पागल! तेरे हाथ में जितना दम हो, उतने जोर से तू गिल्ली फेंक, फिर देख, मैं ऐसा फटका लगाऊँगा कि तुझे गिल्ली ही नहीं मिलेगी..." फिर से सारे ग्वाले हँसने

लगे। 'पागल' के नाम से पुकारे जाने वाला ग्वाला लाल-पीला हो गया।

उसने बिना कुछ कहे सननन करके गिल्ली मोटे ग्वाले के सामने फैंकी।

पल भर के लिए असावधान हुआ मोटा ग्वाला अति वेग से आ रही गिल्ली को देखकर सावधान हो गया। उसने अपना पूरा ध्यान गिल्ली के ऊपर केंद्रित किया।

जब गिल्ली उसके शरीर से दो कदम की दूरी पर आई, तो मोटे ग्वाले ने डंडा घुमाया। 'टककक' की आवाज आई, और वृक्षों को चीरती हुई वह गिल्ली कहीं खो गई। सारे ग्वाले अवाचक बनकर देखते ही रह गए। मोटा ग्वाला हँसने लगा।

"मैंने कहा था ना! तुझे गिल्ली नहीं मिलेगी। जा, ढूंढकर ला।" मोटे ग्वाले ने अपने मूछों पर ताव दिया।

सारे ग्वाले इकट्ठा हो गए। गिल्ली कहाँ चली गई, उसे ढूंढने के लिए सब काम पर लग गए। खोजते-खोजते सब पसीने से लथपथ हो गए।

"मैंने कहा था ना..." मोटा ग्वाला लगातार सभी को अपनी कर्कश आवाज से त्रस्त कर रहा था। सभी गुस्से से भरा चेहरा लेकर मानसिक और शारीरिक थकान के कारण जमीन पर बैठ गए। एक ग्वाला इतना थक गया था कि, वह तो सीधा धरती की गोद में लेट ही गया।

क्षण-दो क्षण ही हुई होगी, कि वह सोया हुआ ग्वाला फटाक से खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर जैसे किसी ने उसके प्राण हर लिए हो ऐसे भाव दिखाई दिए। उसके गले में से चाहते हुए भी आवाज नहीं निकल रही थी।

"अरे भोले! क्या हुआ? तू इस तरह क्यों कांप रहा है...?" वह कुछ भी नहीं बोला। उसने मात्र अपनी दृष्टि से इशारा किया। सभी की दृष्टि उस तरफ गई। वहाँ का दृश्य देखकर सब भाग गए।

उन लोगों को गिल्ली का स्थान मिल गया था। वहाँ कंकाल का मुँह था... व्यंतर की बात सच निकली थी।

(क्रमशः)

LEARNING MAKES A MAN PERFECT

VISIT US

www.faithbook.in

FaithbookOnline

- “Faithbook” नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को “Faithbook” नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से “Faithbook” के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
90820 78796 | 92704 56160